वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:6 अंक: 21 | शनिवार 20 जून 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

राजस्थान विधानसभा में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में सामूहिक योगाभ्यास

योग से स्वस्थ शरीर और सकारात्मक जीवन दृष्टि का निर्माण होता है: देवनानी

कर्तव्य द्वार पर विधायकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने किया योगाभ्यास

योग आज के स्वस्थ समाज के निर्माण का प्रभावी माध्यम

जयपुर. शाबाश इंडिया

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस-2026 के उपलक्ष्य में राजस्थान विधानसभा परिसर स्थित कर्तव्य द्वार पर शुक्रवार प्रातः 6 बजे सामूहिक योग कार्यक्रम योगोत्सव का आयोजन किया गया। राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी के नेतृत्व में आयोजित इस कार्यक्रम में विधायकगण, विधानसभा सचिवालय के अधिकारी एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष देवनानी ने कहा कि योग केवल व्यायाम नहीं, बल्कि शरीर, मन और आत्मा के बीच सामंजस्य स्थापित करने वाली भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। योग स्वस्थ शरीर, संतुलित मन एवं सकारात्मक जीवन दृष्टि प्रदान करता है। शारीरिक समन्वय, मानसिक एकाग्रता और आत्मविश्वास को बढ़ाता है। देवनानी ने कहा कि आज की भागदौड़ भरी जीवनशैली में योग तनावमुक्त जीवन, रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि तथा स्वस्थ समाज के निर्माण का प्रभावी माध्यम है। उन्होंने सभी नागरिकों से योग को दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बनाने का आह्वान किया। कार्यक्रम का समापन देवनानी ने सामूहिक संकल्प के साथ किया। देवनानी ने विश्व कल्याण, मानव एकता और स्वस्थ जीवन की कामना के साथ योग वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को सशक्त बनाते हुए सम्पूर्ण मानवता को स्वस्थ, सद्भाव और संतुलित जीवन को दिशा प्रदान करने का संकल्प कराया। योग कार्यक्रम में प्रमुख सचिव भारत भूषण शर्मा, विशिष्ट सहायक के.के. शर्मा सहित विधानसभा सचिवालय के अधिकारीगण, कर्मचारीगण एवं अन्य गणमान्यजन उपस्थित थे।

प्रमुख योग क्रियाओं का कराया अभ्यास

वैदिक मंगलाचरण एवं प्रार्थना के साथ सूक्ष्म व्यायाम जैसी शिथिलीकरण क्रियाएं कराई गई। योगाचार्य सत्यपाल सिंह और योगाचार्य मेघसिंह ने सामान्य योग प्रोटोकाल के अनुरूप योगासन, प्राणायम, ध्यान और शांतिपाठ कराया। ताड़ासन, वृक्षासन, अर्धचक्रासन, पादहस्तासन एवं त्रिकोणासन का अभ्यास खड़े होकर कराया गया। भद्रासन, वज्रासन, उष्ट्रासन, शशकासन, उन्तानमंडूकासन, वक्रासन और अर्ध-उष्ट्रासन का अभ्यास बैठकर कराया गया। उदर के बल लेट कर मकरासन, भुजंगासन, शलभासन, वहीं पीठ के बल लेट कर किए जाने वाले आसनों में सेतुबंधासन, उत्तानपादासन, अर्ध-हलासन, पवनमुक्तासन एवं शवासन का अभ्यास कराया गया। योगाभ्यास के दौरान प्रतिभागियों ने प्राणायाम एवं ध्यान की विभिन्न विधियों का भी अभ्यास किया।

शाबाश इंडिया

★ नवाब दादा कायम ख़ाँ शहीद दिवस एवं सम्मान समारोह ★

जयपुर

14 वर्षीय इनाया ख़ान को मिला

'कायम रत्न अवॉर्ड-2026'

अमेरिका में विश्व चैंपियन बनकर बढ़ाया देश का मान; जयपुर में अशोक गहलोत के हाथों हुआ सम्मान

जयपुर. शाबाश इंडिया। जयपुर स्थित कॉन्स्टीट्यूशन क्लब में "नवाब दादा कायम ख़ाँ शहीद दिवस एवं सम्मान समारोह" का भव्य आयोजन किया गया। समारोह में राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

मुख्य आकर्षण

- इनाया ख़ान ने अमेरिका में आयोजित 'रोबोफेस्ट वर्ल्ड चैंपियनशिप 2026' (Robofest World Championship 2026) में विश्व विजेता बनकर भारत का गौरव बढ़ाया।
- 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' अभियान की ब्रांड एम्बेसडर के रूप में बालिका शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, बाल अधिकार संरक्षण एवं सामाजिक जागरूकता के क्षेत्र में सक्रिय।
- शिक्षा, न्याय, समाजसेवा, साहित्य, धर्म, कृषि, विज्ञान एवं खेल के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वाले व्यक्तियों को भी सम्मानित किया गया।
- भारतीय सेना के वीर चक्र, शौर्य चक्र एवं अन्य सैन्य पदकों से सम्मानित वीर सैनिकों का हुआ अभिनंदन।

इस अवसर पर राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री गोविंद सिंह डोटासरा, सांसद श्री इमरान मसूद, सांसद श्री राहुल कस्वा , पूर्व मंत्री एवं विधायक श्री अशोक चांदना तथा किशनपोल विधायक श्री अमीन कागजी , विधायक श्री जाकिर हुसैन, विधायक श्री हाकम अली सहित अनेक जनप्रतिनिधि एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

पूर्व मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने इनाया खान की ओर से उनके मामा शकील खान को अवार्ड एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर उनकी उपलब्धियों की सराहना की।

★ देश की शान, बेटियों के लिए प्रेरणा ★

इनाया ख़ान जैसी बेटियाँ देश की नई पहचान हैं तथा उनकी सफलता लाखों युवाओं और बालिकाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।

वर्तमान में दक्षिण अफ्रीका में होने के कारण इनाया ख़ान समारोह में उपस्थित नहीं हो सकीं। उनकी ओर से यह सम्मान उनके मामा शकील ख़ान ने ग्रहण किया। पूर्व मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने शकील ख़ान को अवार्ड एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर इनाया ख़ान की उपलब्धियों की सराहना की।

शिक्षा | न्याय | समाजसेवा | साहित्य | धर्म | कृषि | विज्ञान | खेल

नई सोच, नया भारत, नई पहचान – हमारी बेटियाँ, हमारा अभिमान

दिगंबर जैन महासमिति के
राष्ट्रीय महामंत्री,
दिगंबर जैन सोशल ग्रुप के
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष

20 जून

श्री सुरेन्द्र जी - मृदुला जी पांड्या

को

वैवाहिक वर्षगांठ

की बधाई एवं शुभकामनाएं

आपका दांपत्य जीवन सदैव सुख, समृद्धि, स्वास्थ्य एवं
आपसी प्रेम व विश्वास से परिपूर्ण रहे, यही मंगलकामना है।

शुभेच्छु

समस्त मित्रगण एवं परिवारजन

राजनीति

क्या निजीकरण से सुधरेगी स्वास्थ्य व्यवस्था?

राजु कुमार

मध्यप्रदेश सरकार ने रीवा, देवास और गुना जिलों के कुछ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों के संचालन के लिए आउटसोर्स प्रणाली पर आधारित पांच वर्षीय पायलट परियोजना को मंजूरी दी है। सरकार का तर्क है कि जिन केंद्रों पर चिकित्सकों के अधिकांश पद लंबे समय से रिक्त हैं, वहां निजी एजेंसियों के माध्यम से बेहतर प्रबंधन और चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराई जा सकेंगी। इससे लोगों को स्थानीय स्तर पर उपचार मिलेगा और जिला अस्पतालों पर बढ़ता दबाव भी कम होगा। हालांकि इस निर्णय ने स्वास्थ्य क्षेत्र में नई बहस छेड़ दी है। जन स्वास्थ्य अभियान, मध्यप्रदेश सहित कई सामाजिक संगठनों और विशेषज्ञों ने इस फैसले पर पुनर्विचार की मांग की है। उनका कहना है कि समस्या की पहचान सही है, लेकिन समाधान उचित नहीं है। यदि सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में डॉक्टरों और विशेषज्ञों की कमी है तो प्राथमिकता रिक्त पदों को भरने, बेहतर पदस्थापना और स्वास्थ्य ढांचे को मजबूत करने की होनी चाहिए, न कि संस्थानों का संचालन निजी एजेंसियों को सौंपने की। वास्तव में यह बहस केवल तीन जिलों तक सीमित नहीं है। मूल प्रश्न यह है कि सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं की कमियों का समाधान सरकारी संस्थानों को सशक्त बनाकर किया जाए या धीरे-धीरे उनकी जिम्मेदारी निजी क्षेत्र को सौंप दी जाए। मध्यप्रदेश की स्वास्थ्य व्यवस्था पहले से अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार कुपोषण के साथ-साथ मोटापा, मधुमेह और हृदय रोग जैसी गैर-संचारी बीमारियां भी तेजी से बढ़ रही हैं। मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य के कई संकेतकों में भी प्रदेश को अभी लंबा सफर तय करना है। ग्रामीण स्वास्थ्य सांख्यिकी के अनुसार प्रदेश में 4,134 उप स्वास्थ्य केंद्रों, 1,045 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों और 245 सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों की कमी है। चिकित्सकों, विशेषज्ञों, नर्सों और पैरामेडिकल कर्मचारियों के हजारों पद रिक्त पड़े हैं। परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में मरीजों को जिला अस्पतालों के लिए रेफर करना पड़ता है, जबकि कई ग्रामीण इलाकों में ये अस्पताल 100 से 200 किलोमीटर दूर स्थित हैं।

संपादकीय

महागठबंधन का भविष्य : एकता या विखंडन की राह?

महाराष्ट्र की राजनीति में महाविकास आघाड़ी (एमवीए) लंबे समय से विपक्ष की प्रमुख ताकत रही है। शिवसेना (यूबीटी), राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) और कांग्रेस के इस गठबंधन ने 2019 में सत्ता हासिल की थी, लेकिन 2022 के राजनीतिक घटनाक्रम, 2024 के विधानसभा चुनावों में मिली करारी हार और हालिया स्थानीय निकाय तथा एमएलसी चुनावों ने इसके भविष्य पर सवाल खड़े कर दिए हैं। अब यह चर्चा तेज

है कि क्या गठबंधन एकजुट रह पाएगा या आंतरिक मतभेद इसे कमजोर कर देंगे। 2024 के विधानसभा चुनावों में एमवीए महज 50 सीटों तक सिमट गया, जबकि महायुति (एनडीए) ने स्पष्ट बहुमत हासिल किया। गठबंधन का कोई भी दल विपक्ष के नेता का पद पाने योग्य संख्या नहीं जुटा सका। हालांकि लोकसभा चुनावों में एमवीए ने बेहतर प्रदर्शन करते हुए 30 सीटें जीतीं, लेकिन राज्य स्तर पर उसका प्रभाव सीमित रहा। हालिया बीएमसी और एमएलसी चुनावों में कांग्रेस द्वारा अकेले चुनाव लड़ने की इच्छा तथा सीटों को लेकर सहयोगी दलों के बीच मतभेदों ने गठबंधन की कमजोरियों को उजागर किया। एमवीए की सबसे बड़ी चुनौती उसकी आंतरिक एकता है। शिवसेना (यूबीटी) ठाकरे परिवार की राजनीतिक विरासत और नरम हिंदुत्व की छवि पर भरोसा कर रही है, जबकि एनसीपी (एसपी) शरद पवार के अनुभव और ग्रामीण जनाधार पर निर्भर है। दूसरी ओर, कांग्रेस अपनी स्वतंत्र राजनीतिक पहचान बनाए रखना चाहती है। स्थानीय स्तर पर कार्यकर्ताओं और नेताओं के अलग-अलग रुख के कारण कई बार गठबंधन धर्म पर भी सवाल उठते रहे हैं। सीट बंटवारा भी लगातार विवाद का कारण बनता रहा है। लोकसभा और विधानसभा चुनावों में समझौते के बावजूद स्थानीय निकायों और विधान परिषद चुनावों में दावेदारी को लेकर मतभेद सामने आते रहे हैं। शरद पवार जैसे वरिष्ठ नेता एकता पर जोर देते हैं, लेकिन क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाएं और नेतृत्व की प्रतिस्पर्धा गठबंधन को चुनौती देती हैं। उधर, महायुति सरकार की मजबूत स्थिति, विकास योजनाओं का प्रचार और केंद्र सरकार का सहयोग विपक्ष के लिए मुश्किलें बढ़ा रहा है। एकनाथ शिंदे और देवेंद्र फडणवीस की राजनीतिक रणनीति ने पारंपरिक वोट बैंक पर भी असर डाला है। इसके अलावा, एमवीए अब तक ऐसा साझा वैकल्पिक एजेंडा प्रस्तुत नहीं कर पाया है जो मतदाताओं को व्यापक रूप से आकर्षित कर सके। फिर भी गठबंधन के सामने संभावनाएं समाप्त नहीं हुई हैं। 2024 के लोकसभा चुनावों ने साबित किया कि विपक्षी दल यदि एकजुट रहें तो बेहतर परिणाम हासिल कर सकते हैं। शरद पवार का अनुभव, उद्धव ठाकरे की लोकप्रियता और कांग्रेस का संगठनात्मक ढांचा मिलकर भविष्य में मजबूत चुनौती पेश कर सकते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि गठबंधन एक संयुक्त रणनीतिक समिति बनाकर सीट बंटवारे, उम्मीदवार चयन और साझा एजेंडे पर समय रहते निर्णय ले।

–राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

सिकल रोगी भी समानता और बेहतर उपचार के हकदार

डॉ. ए.आर. दल्ला

हर वर्ष 19 जून को विश्व सिकल सेल दिवस मनाया जाता है। इस अवसर का उद्देश्य सिकल सेल रोग के प्रति जनजागरूकता बढ़ाना, प्रभावित परिवारों को सहयोग प्रदान करना और बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं की आवश्यकता पर वैश्विक स्तर पर ध्यान आकर्षित करना है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने वर्ष 2026 के लिए जीवन रक्षा की खाई को भरें, सिकल सेल पर समानता सुनिश्चित करें विषय निर्धारित किया है। यह संदेश स्पष्ट करता है कि प्रत्येक रोगी को गुणवत्तापूर्ण उपचार और समान स्वास्थ्य अधिकार मिलना चाहिए।

एक समय सिकल सेल रोग को केवल अफ्रीकी मूल के अश्वेत समुदाय तक सीमित माना जाता था, लेकिन चिकित्सा अनुसंधानों से स्पष्ट हुआ कि यह अनुवांशिक रक्त विकार भारत, अरब देशों तथा भूमध्यसागरीय क्षेत्र के अनेक देशों में भी व्यापक रूप से पाया जाता है। रोजगार और पलायन के कारण यह बीमारी अमेरिका और यूरोप सहित दुनिया के कई हिस्सों तक पहुंची। विश्व के विकसित और विकासशील देशों में स्वास्थ्य सेवाओं और आर्थिक संसाधनों का बड़ा अंतर आज भी मौजूद है। इसी कारण सिकल सेल जैसे गंभीर रोगों के उपचार में असमानताएं देखने को मिलती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की इस वर्ष की थीम का उद्देश्य इन असमानताओं को समाप्त कर सभी रोगियों तक समान और सुलभ स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाना है। विश्व सिकल सेल दिवस केवल एक औपचारिक आयोजन नहीं, बल्कि उन लाखों परिवारों के प्रति वैश्विक एकजुटता का प्रतीक है जो इस वंशानुगत बीमारी से प्रभावित हैं। संयुक्त राष्ट्र और विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं लगातार इस बात पर जोर देती रही हैं कि प्रभावित देशों को जनजागरूकता, समय पर जांच, उपचार, अनुसंधान और वित्तीय सहयोग के लिए मिलकर कार्य करना चाहिए। भारत में लंबे समय तक इस बीमारी के बारे में पर्याप्त जानकारी नहीं थी। वर्ष 1952 के बाद इसके मामलों का वैज्ञानिक अध्ययन शुरू हुआ और धीरे-धीरे यह स्पष्ट हुआ कि देश के कई आदिवासी, पिछड़े और वंचित समुदायों में सिकल सेल रोग बड़ी संख्या में मौजूद है। इसके बाद विभिन्न राज्यों ने इस दिशा में जागरूकता और नियंत्रण के प्रयास शुरू किए। छत्तीसगढ़ राज्य के गठन के बाद वहां सिकल सेल रोग को गंभीरता से लिया गया। वर्ष 2008 में विधानसभा ने सर्वसम्मति से इस बीमारी पर नियंत्रण का संकल्प पारित किया। रायपुर में आयोजित एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के माध्यम से भी इस विषय पर वैश्विक स्तर पर ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया गया। राष्ट्रीय स्तर पर इस अभियान को नई गति तब मिली जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सिकल सेल उन्मूलन को मिशन मोड में आगे बढ़ाने की घोषणा की। मध्यप्रदेश के शहडोल में विशेष सिकल नियंत्रण केंद्र की स्थापना के साथ देश के 17 प्रभावित राज्यों के 275 जिलों में सर्वेक्षण, जांच, जनजागरूकता और रोकथाम संबंधी गतिविधियां शुरू की गईं। इसका उद्देश्य समय रहते रोग की पहचान कर प्रभावी उपचार सुनिश्चित करना है। प्रधानमंत्री ने वर्ष 2047 तक भारत को सिकल सेल रोग से मुक्त बनाने का लक्ष्य रखा है। यह महत्वाकांक्षी लक्ष्य तभी संभव होगा जब सरकार, चिकित्सा संस्थान, सामाजिक संगठन और आम नागरिक मिलकर जागरूकता बढ़ाने, अनुसंधान को प्रोत्साहन देने और आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराने में सक्रिय भूमिका निभाएं। विश्व सिकल सेल दिवस हमें यह याद दिलाता है कि हर रोगी सम्मान, समान अवसर और गुणवत्तापूर्ण उपचार का अधिकार रखता है।

खुशी आए तो जोश पर नियंत्रण रखें, मुसीबत आए तो होश न खोएं: आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज

औरंगाबाद/दाहोद (गुजरात). शाबाश इंडिया

''जिस तरह खुशी और मुसीबत बिना किसी अपॉइंटमेंट के आ जाती हैं, उसी तरह स्वयं को हमेशा तैयार रखें। मुसीबत आए तो होश न खोएं और खुशी आए तो जोश पर नियंत्रण रखें।'' यह प्रेरणादायी संदेश अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज ने दाहोद में श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए दिया। अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज एवं उपाध्याय पियूष सागरजी महाराज ससंघ की अहिंसा संस्कार पदयात्रा दीक्षाभूमि परतापुर (बांसवाड़ा) से पुष्पगिरी की ओर अग्रसर है। इसी क्रम में दो दिवसीय प्रवास के दौरान दाहोद स्थित जैन मंदिर में उपस्थित गुरु भक्तों को संबोधित करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि बहुत कम लोग ऐसे होते हैं जो आपबीती और परबीती को सही मायनों में समझते हैं। उन्होंने कहा कि यदि हमारे जीवन में दुःख का पहाड़ टूट पड़े और हम किसी तरह उसका सामना करें, तो जब किसी अन्य व्यक्ति पर वैसी ही विपत्ति आए, तब हमें भी उसी संवेदनशीलता के साथ उसकी पीड़ा को समझना चाहिए। लेकिन आज समाज में ऐसे लोग अधिक हैं जो दूसरों को तो सलाह देते हैं कि ''फूल आहिस्ता तोड़ो, फूल बहुत नाजुक है'', जबकि स्वयं उस संवेदनशीलता का पालन नहीं करते। यही दोहरे जीवन का उदाहरण है। आचार्यश्री ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति का जीवन अनमोल है। हमारी खुशी और दूसरों की सफलता, दोनों ही हमारे जीवन की उन्नति का आधार बन सकती हैं। अधिकांश दुःख, परेशानी और पीड़ा हमारी सोच पर निर्भर करते हैं। यदि हम अपने विचारों और भावनाओं को सकारात्मक दिशा दें तथा दूसरों के सुख और कल्याण की भावना रखें, तो समाज अधिक शांत और समृद्ध बन सकता है। अपने प्रवचन के दौरान उन्होंने एक प्रेरक प्रसंग भी सुनाया। तीन मित्र धन की खोज में निकले। रास्ते में पहले मित्र को चांदी की खान मिली और वह प्रसन्न होकर वहीं रुक गया। दूसरा मित्र आगे बढ़ा तो उसे सोने की खान मिल गई और वह भी अपनी मंजिल समझकर वहीं ठहर गया। तीसरा मित्र निराश और

व्यथित मन से आगे बढ़ता रहा, लेकिन अंततः उसे हीरे की खान मिल गई। उसे देखकर उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। इस प्रसंग के माध्यम से आचार्यश्री ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को उसके भाग्य और कर्मों के अनुसार फल प्राप्त होता है। इसलिए किसी दूसरे की खुशहाली या सफलता देखकर स्वयं को परेशान करने की आवश्यकता नहीं है। धैर्य और विश्वास बनाए रखें, क्योंकि परमात्मा के यहां देर हो सकती है, अंधेर नहीं।

-नरेंद्र अजमेरा, पियूष कासलीवाल, औरंगाबाद

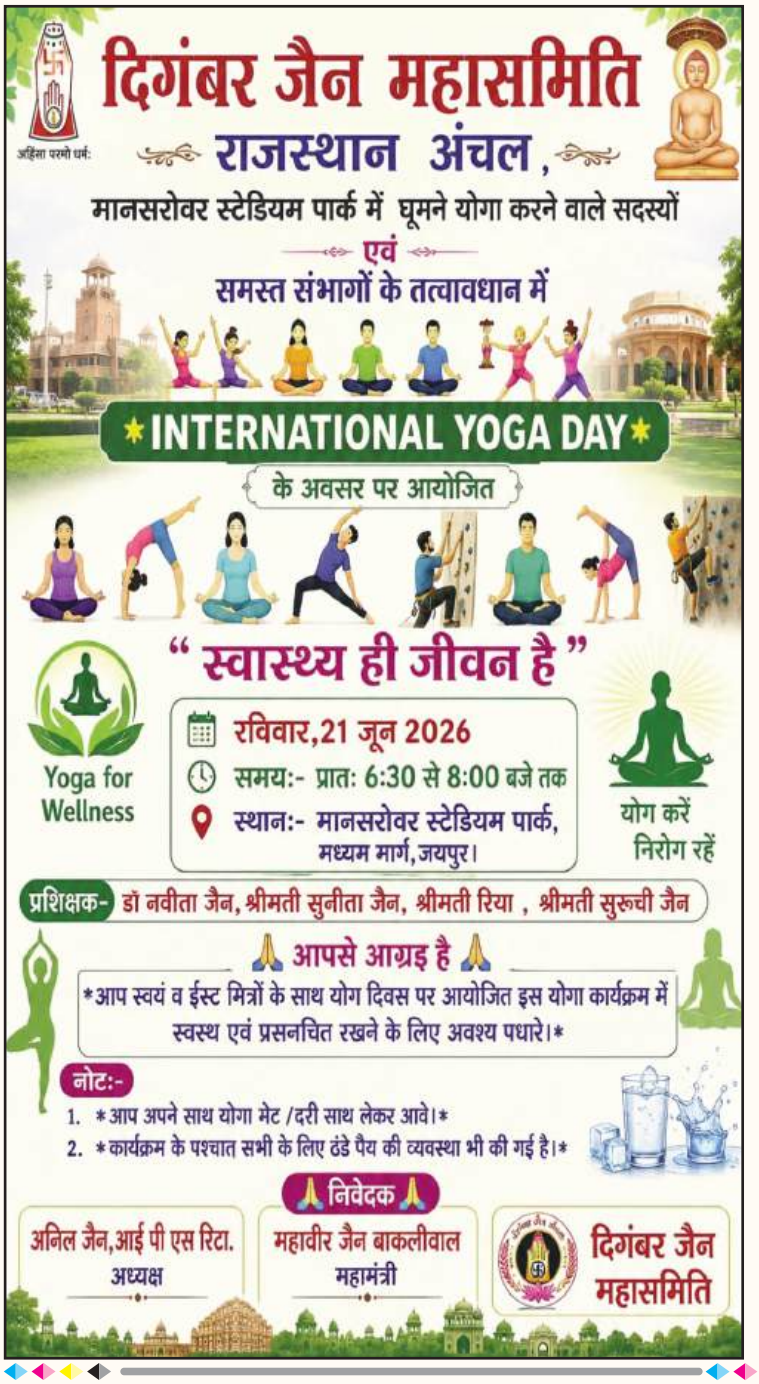

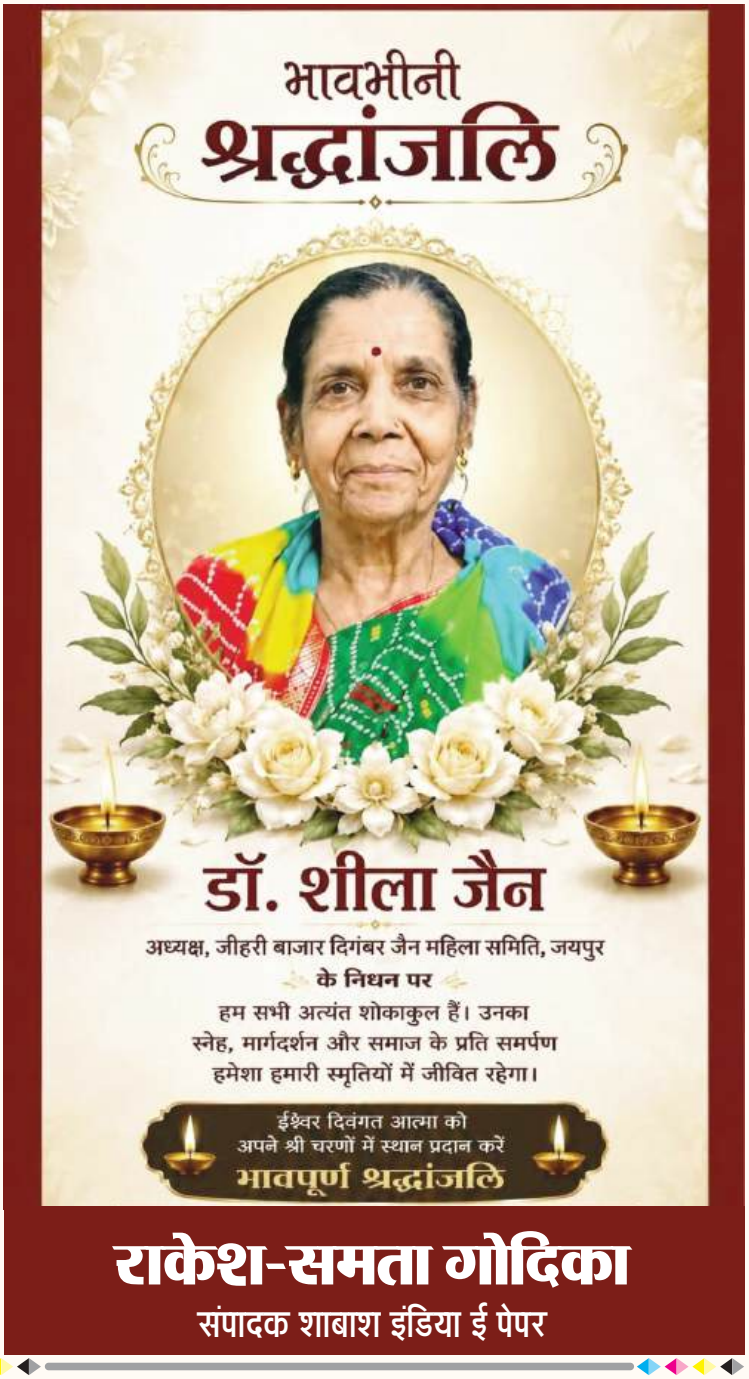

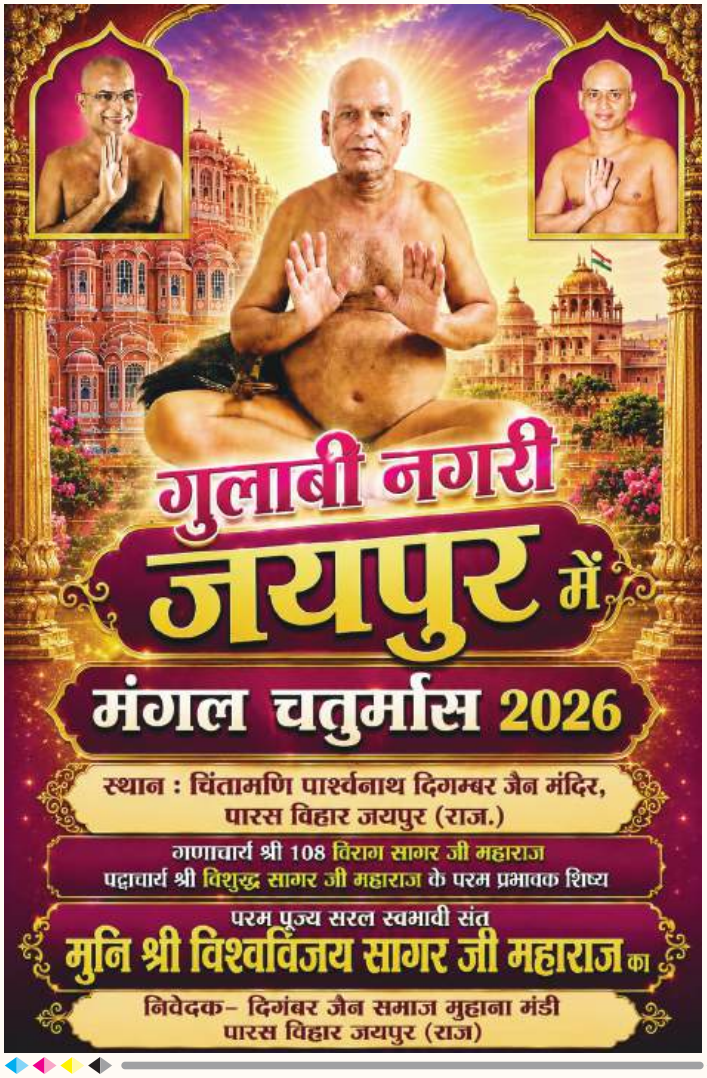

श्रुत पंचमी पर हुई विशेष शांतिधारा

जयपुर. शाबाश इंडिया। सकल दिगम्बर जैन समाज पारस विहार एवं आसपास की कॉलोनियों के साधर्मी बंधुओं तथा सकल दिगम्बर जैन समाज, जयपुर के पुण्योदय एवं आचार्य श्री कुशाग्रनंदी जी महाराज के आशीर्वाद से परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सागर महाराज एवं पट्टाचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य, परम पूज्य सरल स्वभावी संत मुनि श्री विश्वविजय सागर जी महाराज का वर्ष 2026 का चातुर्मास श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, पारस विहार, मुहाना मंडी, जयपुर में होना संभावित है। मंदिर प्रबंध समिति शीघ्र ही श्रीफल भेंट कर उनसे चातुर्मास हेतु औपचारिक आशीर्वाद प्राप्त करेगी। प्रचार संयोजक राकेश गोदिका ने बताया कि फरवरी 2026 में मुहाना मंडी स्थित श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, पारस विहार में पांच दिवसीय प्रवास के दौरान मुनि श्री ने मंदिर समिति को वर्ष 2026 के चातुर्मास के लिए अपना आशीर्वाद प्रदान किया था। उल्लेखनीय है कि गिरनार जी की अपनी यात्रा पूर्ण करने के बाद वे अब पुनः राजस्थान की सीमा में प्रवेश कर चुके हैं। मंदिर प्रबंधकारिणी समिति, मोहनपुरा-मुहाना मंडी के अध्यक्ष पवन गोदिका ने बताया कि श्रुत पंचमी के पावन अवसर पर शाबाश इंडिया के संपादक राकेश गोदिका एवं अशोक सेठी को विशेष शांतिधारा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

श्रुत पंचमी जिनवाणी के प्रति श्रद्धा, संरक्षण एवं कृतज्ञता का महापर्व

कुचामन सिटी। श्रुत पंचमी जैन धर्म का एक प्रमुख पर्व है, जो जैन आगमों एवं पवित्र शास्त्रों के प्रति श्रद्धा, सम्मान, संरक्षण और कृतज्ञता का संदेश देता है। यह पर्व प्रत्येक वर्ष ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी के दिन श्रद्धा एवं भक्ति के साथ मनाया जाता है। श्रुत ज्ञान वह दिव्य प्रकाश है, जो अज्ञान रूपी अंधकार को दूर कर मोक्ष मार्ग को आलोकित करता है। श्रुत पंचमी हमें ज्ञान, श्रद्धा और संयम के पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा देती है तथा समाज में एकता, प्रेम और धार्मिक जागरूकता का संचार करती है। लालचंद पहाड़िया ने बताया कि श्रुत पंचमी महापर्व के अवसर पर कुचामन सिटी स्थित महावीर मंदिर, डीडवाना रोड में प्रातःकाल कलशाभिषेक एवं शांतिधारा का आयोजन किया गया। इसके पश्चात जिनवाणी माता को श्रद्धापूर्वक सिर पर विराजमान कर जैन पंचरंगा ध्वज के साथ भव्य शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा में बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने उत्साह और भक्ति भाव से सहभागिता निभाई। शोभायात्रा के उपरांत जिनवाणी माता की विशेष पूजा-अर्चना की गई। इस दौरान उपस्थित श्रद्धालुओं ने जिनवाणी के नियमित स्वाध्याय का संकल्प लेते हुए अर्घ्य समर्पित किए। तत्पश्चात विधि-विधान के साथ जिनवाणी माता को पुनः यथास्थान विराजमान किया गया। अमित पाटोदी के अनुसार कार्यक्रम में चिरंजी लाल, अशोक, भव्य, विमलकुमार पाटोदी, कमलकुमार, महेंद्र, पंकज पहाड़िया, भंवरलाल झांझरी, भागचंद अजमेरा, मनीष गंगवाल, महावीर प्रसाद, माणकचंद काला, सुरेश कुमार, पवन, प्रतीक तथा ननू पांड्या सहित अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने भावभक्ति के साथ श्रुत पंचमी महापर्व में सहभागिता निभाई और आयोजन को सफल बनाने में सहयोग प्रदान किया।

-सुभाष पहाड़िया

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन समिति एवं सकल जैन समाज, अग्रवाल फार्म, जयपुर

मीना जैन मेमोरियल ट्रस्ट एवं कंचन देवी मेमोरियल ट्रस्ट (रजि.)

द्वारा आयोजित

स्व. श्रीमती मीना कुमारी जैन

(धर्मपत्नी श्री ज्ञान चन्द जैन) की षष्ठम् पुण्य स्मृति पर

स्वैच्छिक रक्तदान शिविर एवं नि:शुल्क जाँच शिविर

स्व. श्रीमती मीना कुमारी जैन

1 मार्च, 1952- 15 जुलाई, 2020

रविवार, 12 जुलाई 2026

प्रात: 9.30 बजे से दोपहर 3.00 बजे तक

दीप प्रज्वलन कर्ता

प्रो. इन्द्र प्रभ जैन-प्रो. मृदुला जैन

निःशुल्क जाँच एवं परामर्श

1. डॉ. अविनाश जैन (DM), गठिया और ऑटोइम्यून बीमारी विशेषज्ञ
2. देशबन्धु ई.एन.टी. अस्पताल द्वारा कान, नाक, गले की जाँच
3. मनु श्री आई अस्पताल एवं आई 2 आई ऑप्टिक्स द्वारा नेत्र जाँच
4. डॉ. प्रमिला जैन डेन्टल सर्जन द्वारा डेन्टल चेकअप एवं बी.पी, शुगर एवं केल्सीयम की जाँच,
5. डॉ. विनोद गोत्तम, जनरल फिजिशियन द्वारा परामर्श
6. फिजियोथेरेपिष्ट डॉ. दीपक शर्मा, डॉ हिमांशु वशिष्ठ एवं डॉ. आस्था जैन द्वारा परामर्श

मुख्य अतिथि

श्रीमती मंजू शर्मा जी

सांसद लोकसभा जयपुर

स्थान- श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर

सोभागमल जैन	सुमत प्रकाश जैन	शरद हिंगड़	सिद्ध कुमार सेठी	श्रीमती भँवरी देवी जैन	पंकज जैन	जिनेश कुमार जैन	ज्ञानचन्द जैन
सलाहकार महामंत्री श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर	अध्यक्ष श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर	अध्यक्ष कंचन देवी मेमोरियल ट्रस्ट, जयपुर	अध्यक्ष श्री पार्श्वनाथ नव युवक मण्डल	अध्यक्ष श्री पार्श्वनाथ महिला मण्डल	मुख्य संयोजक विद्या-वसु पाठशाला श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर	प्रदेश अध्यक्ष WPSF	संयोजक एवं अध्यक्ष मीना जैन मेमोरियल ट्रस्ट, जयपुर

सभी रक्तवीरों को प्रशस्ती पत्र से सम्मानित किया जायेगा।

रक्तदान हेतू सम्पर्क करें:- 9414643144, 9414267852, 7793090000, 9529530467, 9314551550, 9351302142, 9887977479, 9413301367

श्रुत पंचमी पर श्रद्धालुओं ने जाना कैसे लिपिबद्ध हुआ था जैन धर्म का पहला ग्रंथ

जयपुर. शाबाश इंडिया

महल योजना, जगतपुरा स्थित श्री 1008 मुनि सुव्रतनाथ दिगंबर जैन मंदिर में श्रुत पंचमी का पावन महापर्व अगाध श्रद्धा, भक्ति एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर एक ओर भव्य प्रभात फेरी निकालकर धर्म प्रभावना की गई, वहीं दूसरी ओर जैन समाज के प्रबुद्धजनों ने श्रुत ज्ञान के लिपिबद्ध होने के गौरवशाली इतिहास का स्मरण किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य मंदिर में जिन सरस्वती की आराधना एवं उन्हें भक्तिभाव से अर्घ्य समर्पित करने के साथ हुआ। इसके पश्चात श्रद्धालुओं ने अत्यंत श्रद्धा और विनय भाव से पवित्र जिनवाणी ग्रंथ को अपने मस्तक पर विराजित किया। मंदिर समिति के समन्वयक अभिषेक सांघी ने बताया कि धर्म प्रभावना के उद्देश्य से मंदिर समिति के तत्वावधान में भव्य शोभायात्रा एवं प्रभात फेरी का आयोजन किया गया। प्रभात फेरी के दौरान पूरा क्षेत्र ''जिनवाणी माता की जय'' के जयघोष एवं भक्तिमय भजनों से गुंजायमान हो उठा।

श्रद्धालुओं का उत्साह और भक्ति देखते ही बनती थी। समिति के संरक्षक निर्मल मुकेश सांघी ने कहा कि श्रुत पंचमी जैन धर्म में ज्ञान की आराधना का महापर्व है। इसी दिन जैन इतिहास में पहली बार भगवान महावीर की दिव्य देशना को शास्त्र स्वरूप लिपिबद्ध किया गया था। आज भले ही अरिहंत परमेष्ठी प्रत्यक्ष रूप से हमारे बीच उपस्थित नहीं हैं, किंतु उनकी दिव्यध्वनि हमें 'श्रुत' अर्थात आगमों के माध्यम से प्राप्त होती है। जिन सरस्वती, जिनवाणी माता के रूप में वही दिव्य ज्ञान आज भी सुरक्षित है और श्रद्धालुओं का मार्गदर्शन कर रहा है। उन्होंने बताया कि जिस प्रकार जन्म देने वाली माता पूजनीय होती है, उसी प्रकार जिनवाणी माता भी जैन समाज के लिए परम पूजनीय है। मुनि पुष्पदंत और मुनि भूतबलि ने अंतिम श्रुतकेवली आचार्य धरसेन से प्राप्त गूढ़ ज्ञान को 'षट्खंडागम' नामक महान ग्रंथराज के रूप में लिपिबद्ध किया। इस ग्रंथ की रचना के दौरान मंगलाचरण के रूप में अनादिनिधन 'णमोकार मंत्र' को सर्वप्रथम अंकित किया गया। इस ऐतिहासिक एवं मांगलिक अवसर पर जगतपुरा क्षेत्र के जैन समाज ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से शिव पिंकल, नमन भगचंद, मैना तोषी, नेम इंदु, हेमंत ज्योति, डॉ. प्रीति, मोना मंजु सहित मंदिर समिति के पदाधिकारियों एवं बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने अपनी सक्रिय सहभागिता निभाई। कार्यक्रम के समापन पर प्रभात फेरी एवं शिविर में भाग लेने वाले शिविरार्थियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए।

विश्व संगीत दिवस पर रिलीज हुआ ''देखा जब तुम्हें'' संगीत एल्बम

जयपुर. शाबाश इंडिया

विश्व संगीत दिवस के उपलक्ष्य में सुप्रसिद्ध गायिका प्रोफेसर सुमन यादव एवं सुप्रसिद्ध गायक संजय रायजादा की मधुर एवं भावपूर्ण आवाज में प्रस्तुत संगीत एल्बम ''देखा जब तुम्हें'' का वीडियो संगीत जगत के पुरोधा डॉ. प्रकाश छबलानी द्वारा रिलीज किया गया। अपने मधुर संगीत, संवेदनशील भावों और उत्कृष्ट प्रस्तुति के कारण यह गीत श्रोताओं के बीच विशेष आकर्षण का केंद्र बनने की क्षमता रखता है। गीत की स्वर-रचना विक्रम यादव ने अत्यंत कलात्मकता और सृजनात्मक दृष्टिकोण के साथ की है, जबकि इसका स्वर-संयोजन यशवर्धन सिंह यादव ने प्रभावशाली ढंग से किया है। गीत के बोल स्वयं प्रोफेसर सुमन यादव ने लिखे हैं, जिनमें प्रेम, संवेदना और मानवीय भावनाओं की कोमल अभिव्यक्ति सहज रूप से झलकती है। सरल, सहज और हृदयस्पर्शी शब्दों से सजी यह रचना श्रोताओं के मन में अपनी अलग पहचान बनाने में सक्षम है। प्रोफेसर सुमन यादव और संजय रायजादा ने अपनी सुमधुर, परिपक्व एवं भावप्रवण गायकी से इस गीत को नई ऊँचाइयाँ प्रदान की हैं। दोनों कलाकारों की स्वर-साधना, सुरों पर मजबूत पकड़ और भावों की गहन अभिव्यक्ति गीत को जीवंत बना देती है। उनकी प्रस्तुति में तकनीकी उत्कृष्टता के साथ संगीत के प्रति गहरा समर्पण और संवेदनशीलता भी स्पष्ट रूप से महसूस होती है। यही कारण है कि यह गीत युवा वर्ग से लेकर वरिष्ठ संगीत प्रेमियों तक सभी आयु वर्ग के श्रोताओं को समान रूप से आकर्षित करने की क्षमता रखता है। संगीत के क्षेत्र में वर्षों की अथक साधना, अनुभव और निरंतर रचनात्मक प्रयासों के परिणामस्वरूप कलाकारों ने इस गीत को एक उत्कृष्ट एवं स्मरणीय स्वरूप प्रदान किया है। ''देखा जब तुम्हें'' केवल एक गीत नहीं, बल्कि सुरों, शब्दों और भावनाओं का ऐसा सुंदर संगम है, जो श्रोताओं के हृदय को स्पर्श कर लंबे समय तक उनकी स्मृतियों में बना रहता है। इस संगीत एल्बम का विमोचन भारतीय संगीत परंपरा, रचनात्मकता और संगीत-साधना के प्रति समर्पण का एक प्रेरक एवं सराहनीय उदाहरण बनकर सामने आया है।

श्रुत पंचमी महोत्सव बड़े उत्साह एवं श्रद्धा के साथ मनाया गया

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। बापू नगर स्थित श्री पदम प्रभु दिगंबर जैन मंदिर में श्रुत पंचमी महोत्सव श्रद्धा, भक्ति एवं उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों एवं भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया। प्रचार मंत्री प्रकाश पाटनी ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातःकाल श्री शांतिनाथ भगवान एवं श्री पार्श्वनाथ भगवान के अभिषेक से हुआ। इसके पश्चात प्रकाश अग्रवाल, चांदमल जैन, जितेंद्र सोनी एवं राजेंद्र सोगानी ने शांतिधारा का पुण्य लाभ प्राप्त किया। तत्पश्चात श्रावक-श्राविकाओं ने श्रद्धापूर्वक मां जिनवाणी की पूजा-अर्चना कर अर्घ्य समर्पित किए। इसके बाद मंदिर परिसर से भव्य शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा में जैन पाठशाला के बालक एवं पुरुष श्रद्धालु हाथों में जैन ध्वज लेकर चल रहे थे, जबकि महिला श्रद्धालुओं ने अपने सिर पर जिनवाणी विराजमान कर जिनवाणी के संदेशों का जयघोष करते हुए धर्म प्रभावना की। भक्तिमय वातावरण के बीच शोभायात्रा नगर के प्रमुख मार्गों से होकर पुनः मंदिर पहुंची। मंदिर पहुंचने पर सभी श्रद्धालुओं ने वेदी की परिक्रमा की तथा महिला मंडल की सदस्यों ने भक्ति नृत्य प्रस्तुत कर कार्यक्रम को और अधिक भक्तिमय बना दिया। मंदिर समिति के अध्यक्ष लक्ष्मीकांत जी ने श्रुत पंचमी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह पर्व ज्ञान की आराधना तथा पवित्र शास्त्रों के संरक्षण और संवर्धन का ऐतिहासिक महापर्व है। उन्होंने बताया कि आचार्य पुष्पदंत एवं भूतबली ने दिगंबर जैन परंपरा के प्राचीन एवं महत्वपूर्ण ग्रंथ ''षट्खंडागम'' को लिपिबद्ध कर जैन साहित्य को अमूल्य धरोहर प्रदान की थी। श्रुत पंचमी महोत्सव के अवसर पर आयोजित सभी धार्मिक कार्यक्रमों एवं शोभायात्रा में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाकर आयोजन को सफल बनाया।

गायत्री नगर में गणिनी आर्यिका विभा श्री माताजी ससंघ का भव्य मंगल प्रवेश

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री दिगंबर जैन मंदिर, महारानी फार्म, गायत्री नगर, जयपुर मंदिर प्रबंध समिति के तत्वावधान में बुधवार सायं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सागर जी महामुनिराज एवं चर्या शिरोमणि आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज की आज्ञानुवर्ती विदुषी शिष्या परम पूज्य गणिनी आर्यिका श्री विभा श्री माताजी ससंघ का गायत्री नगर जैन मंदिर में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। सायं 6:30 बजे मीरा मार्ग स्थित मानसरोवर जैन मंदिर से बैंड-बाजों के साथ विहार प्रारंभ हुआ और सायं 7 बजे आर्यिका श्री ससंघ का गायत्री नगर जैन मंदिर में श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मंगल प्रवेश कराया गया। मंदिर प्रबंध समिति के अध्यक्ष अरुण शाह ने बताया कि विहार के दौरान मार्ग

में अनेक श्रावकों के आवासों के समक्ष आरती एवं पाद प्रक्षालन का आयोजन किया गया। मंदिर पहुंचने पर अध्यक्ष अरुण शाह के नेतृत्व में मंत्री राजेश वोहरा, संयुक्त मंत्री संजय ठोलिया, कोषाध्यक्ष राकेश छावड़ा, उपाध्यक्ष विजय सोगानी, संतोष गंगवाल, राकेश पाटोदी, पदम झांझरी, बसंत बाकलीवाल, संतोष रावका सहित अन्य पदाधिकारियों ने आरती कर पूज्य संघ का अभिनंदन किया। महिला मंडल एवं मुनि वैय्यावृति महिला समूह की पदाधिकारी एवं सदस्याएं मंगल कलश लेकर अगुवाई में शामिल हुईं तथा श्रद्धापूर्वक पाद प्रक्षालन किया। अपने मंगल प्रवचन में गणिनी आर्यिका विभा श्री माताजी ने कहा कि जहां संतों का आगमन होता है, वहां जैन संस्कृति सदैव मुस्कुराती रहती है। उन्होंने कहा कि संतों का समागम महान पुण्य का परिणाम होता है और उनका सान्निध्य भविष्य के लिए अनंत सातिशय पुण्य प्रदान करता है। इसलिए प्रत्येक भव्य आत्मा को इसे अपना सौभाग्य मानना चाहिए तथा अवसर मिलने पर नियमित आराधना कर अपने जीवन को मंगलमय बनाना चाहिए। इस अवसर पर परम पूज्य श्रमणी आर्यिका विनय श्री माताजी ने श्रद्धालुओं के लिए रोचक प्रश्नोत्तरी का आयोजन भी कराया। युवा परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन ने बताया कि पूज्य आर्यिका संघ में कुल 11 विदुषी आर्यिकाएं विराजमान हैं। उनके सान्निध्य में श्रुत पंचमी महोत्सव के अवसर पर 19 जून को प्रातः 8 बजे मंदिर के बेसमेंट में श्रुत स्कंध विधान का आयोजन किया जाएगा। वहीं सायं 7:30 बजे आनंद यात्रा निकाली जाएगी, जिसके उपरांत संयोजिका संगीता छाबड़ा एवं मनीषा टोंग्या के निर्देशन में बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाएंगे। **प्रेषक : उदयभान जैन, जयपुर**

ज्ञान, शास्त्र और परंपरा का पावन पर्व 'श्रुत पंचमी' हर्षोल्लास से मनाई गई

अजमेर. शाबाश इंडिया

श्री दिगंबर जैन महासमिति महिला एवं युवा महिला संभाग, अजमेर की आगरा गेट इकाई के तत्वावधान में महापूत जिनालय (सोनी जी की नसियां) में श्रीजी एवं शास्त्रजी के सान्निध्य में श्रद्धा, भक्ति और उल्लास के साथ श्रुत पंचमी महापर्व मनाया गया। इकाई अध्यक्ष अंजू गोधा एवं मंत्री मंजू पाटनी ने बताया कि प्रातः 6 बजे महासमिति की सदस्याओं एवं जैन धर्मावलंबियों द्वारा पवित्र शास्त्रजी को श्रद्धापूर्वक मस्तक पर विराजमान कर भव्य शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा विभिन्न मार्गों से होती हुई सोनी जी की नसियां पहुंची, जहां श्राविका आशा गदिया एवं अंजू बड़जात्या के सहयोग तथा शशि गंगवाल, इंद्रा गदिया एवं शांता काला के संयोजन में श्रद्धालुओं ने श्रुत स्कंध की विधिवत पूजा-अर्चना की। महासमिति की राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष मधु पाटनी ने श्रुत पंचमी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि 'श्रुत' का अर्थ शास्त्रों से प्राप्त ज्ञान है। यह पर्व जैन आगम ग्रंथों, जैन साहित्य तथा ज्ञान परंपरा के संरक्षण, संवर्धन और सम्मान का प्रतीक है। इसी पावन दिवस पर जैन धर्म के प्राचीनतम ग्रंथ 'षट्खंडागम' की रचना पूर्ण हुई थी, इसलिए यह दिन विशेष श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया जाता है। इकाई कोषाध्यक्ष मधु काला ने बताया कि आचार्य धरसेन ने तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की दिव्य वाणी को मौखिक परंपरा के माध्यम से सुरक्षित रखा। बाद में उनके प्रमुख शिष्यों आचार्य पुष्पदंत एवं आचार्य भूतबली ने उस दिव्य ज्ञान को लिखित रूप में लिपिबद्ध किया। इसी ऐतिहासिक उपलब्धि की स्मृति में प्रतिवर्ष श्रुत पंचमी पर्व मनाया जाता है। मंत्री सुषमा पाटनी एवं रिंकू कासलीवाल ने बताया कि कार्यक्रम में समाजश्रेष्ठी प्रतिभा सोनी, शिखा बिलाला, रेनू पाटनी, मधु गोधा, किरण गोधा, ममता कासलीवाल, आशा कासलीवाल, नवल छाबड़ा, सरला झांझरी, रेखा जैन, अनामिका सुरलाया, इंद्रा कासलीवाल एवं अंजू अजमेरा सहित महासमिति की अनेक सदस्याओं एवं बड़ी संख्या में जैन धर्मावलंबियों ने उपस्थित होकर श्रद्धाभाव से सहभागिता निभाई।

जिनवाणी माता को पालकी में विराजमान कर निकाली भव्य शोभायात्रा

आर्यिका विज्ञा श्री के सानिध्य में श्रुत पंचमी महोत्सव मनाया, चंद्रप्रभु नसिया में नवीन कुएं के निर्माण हेतु हुआ भूमिपूजन

जयपुर. शाबाश इंडिया

गणिनी आर्यिका विज्ञा श्री माताजी ससंघ के पावन सानिध्य में शुक्रवार को चतुर्भुज तालाब के पास स्थित श्री चंद्रप्रभु नसिया, पुरानी टोंक में श्रुत पंचमी महोत्सव श्रद्धा, भक्ति और उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर जिनवाणी माता की भव्य शोभायात्रा निकाली गई तथा चंद्रप्रभु नसिया परिसर में नवीन कुएं के निर्माण हेतु भूमिपूजन कर खुदाई कार्य का शुभारंभ किया गया। प्रवक्ता राजेश अरिहंत ने बताया कि प्रातः पांच मंदिर से जिनवाणी माता की शोभायात्रा प्रारंभ हुई। सर्वप्रथम जिनवाणी माता की पूजा-अर्चना कर उन्हें सुसज्जित पालकी में विराजमान किया गया। इसके बाद शोभायात्रा निवाई दरवाजा होते हुए चंद्रप्रभु नसिया पहुंची। यात्रा में श्रावकों ने जिनवाणी माता की पालकी को अपने मस्तक पर धारण किया, जबकि महिलाएं एक समान वेशभूषा में सिर पर मंगल कलश लेकर चल रही थीं। पुरुष श्रद्धालु हाथों में पंचरंगी ध्वज थामे हुए थे तथा वर्धमान पाठशाला के बालक ह्लजिनवाणी माता की जयह्व के जयघोष करते हुए वातावरण को भक्तिमय बना रहे थे। पूज्य गुरु मां विज्ञा श्री ससंघ भी शोभायात्रा में शामिल रहीं। मार्ग में श्रद्धालुओं ने अपने घरों के बाहर गुरु मां का चरण प्रक्षालन कर जिनवाणी माता की आरती उतारी। चंद्रप्रभु नसिया पहुंचने पर जिनवाणी माता को पालकी से उतारकर समवसरण में विराजमान किया गया। इसके उपरांत भगवान चंद्रप्रभु का अभिषेक, वृहद शांतिधारा, नित्य नियम पूजा तथा अर्घ्य एवं श्रीफल समर्पण किया गया। गुरु मां विज्ञा श्री के सानिध्य में श्रुत स्कंध के मंत्रोच्चार के साथ श्रद्धालुओं ने अष्टद्रव्य, अर्घ्य एवं श्रीफल अर्पित कर जिनवाणी माता की विधिवत पूजा की। मंगल प्रवचन से पूर्व गुरु मां के चरण प्रक्षालन एवं जिनवाणी भेंट करने का सौभाग्य कुशाल देवी, अतुल कुमार, पायल जैन रांवका परिवार को प्राप्त हुआ। तत्पश्चात परम पूज्य आर्यिका गेभ्या श्री माताजी ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए आर्यिका विज्ञा श्री माताजी ने कहा कि श्रुत पंचमी जैन धर्म में ज्ञान, शिक्षा और शास्त्रों के सम्मान का सर्वोच्च पर्व है। भगवान महावीर के निर्वाण के बाद उनका दिव्य ज्ञान सदियों तक गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से मौखिक रूप से संरक्षित रहा। ज्ञान के लुप्त होने की आशंका को देखते हुए महान आचार्य पुष्पदंत एवं भूतबलि ने इसी दिन जैन धर्म के प्राचीन एवं महत्वपूर्ण ग्रंथ ''षट्खंडागम'' को पहली बार ताड़पत्रों पर लिपिबद्ध किया। उन्होंने कहा कि 'जिनवाणी' का अर्थ राग, द्वेष और इंद्रियों पर विजय प्राप्त करने वाले अरिहंत एवं तीर्थंकरों की दिव्य वाणी है। यही श्रुत ज्ञान जीवों को अज्ञान रूपी अंधकार से निकालकर मोक्ष एवं आत्मकल्याण का मार्ग दिखाता है। वर्तमान समय में यदि मानव जिनवाणी के सिद्धांतों का अनुसरण कर ले, तो उसका कल्याण निश्चित है। कार्यक्रम का संचालन राजेश अरिहंत ने किया। इसके पश्चात नवीन कुएं के निर्माण हेतु विधिवत भूमिपूजन संपन्न हुआ और श्रद्धालुओं की उपस्थिति में खुदाई कार्य प्रारंभ कराया गया। पूज्य गुरु मां विज्ञा श्री ससंघ की आहारचर्या के बाद दोपहर में स्वाध्याय एवं सामायिक के कार्यक्रम आयोजित हुए। सायंकाल आनंद यात्रा, शंका समाधान कार्यक्रम तथा 'शास्त्र सजाओ प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया, जिसमें विजेताओं को समाज की ओर से सम्मानित किया गया। अंत में आर्यिका विज्ञा श्री एवं जिनवाणी माता की 108 दीपकों से भव्य महाआरती संपन्न हुई।

प्रतापनगर सेक्टर-5 में श्रद्धा एवं भक्ति के साथ मनाया गया श्रुत पंचमी महापर्व

जयपुर. शाबाश इंडिया

प्रतापनगर सेक्टर-5, टोंक रोड स्थित श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर में श्रुत पंचमी महापर्व श्रद्धा, भक्ति एवं उल्लास के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर प्रातःकाल भगवान का अभिषेक एवं शांतिधारा संपन्न होने के बाद नित्य-नियम की पूजा भक्तिभाव से की गई। इसके उपरांत दिगम्बर जैन महासमिति, सांगानेर संभाग एवं प्रतापनगर सेक्टर-5 के संयुक्त तत्वावधान में श्रुत पंचमी महापर्व समारोह-2026 का शुभारंभ हुआ। समारोह में षट्खंडागम शास्त्र को वेदी पर विराजमान कराने का पुण्यार्जक बनने का सौभाग्य सुनील कुमार चौधरी एवं भागचंद जी साखुनियां को प्राप्त हुआ, जबकि दीप प्रज्ज्वलन का पुण्य कैलाशचंद जैन मलैया ने अर्जित किया। कार्यक्रम के दौरान श्रद्धालुओं ने जिनवाणी माता की भावपूर्ण भक्ति एवं स्तुति की। अंत में श्रुत स्वरूप जिनवाणी माता की सामूहिक आरती कर पूजा-अर्चना का कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस अवसर पर दिगम्बर जैन महासमिति सांगानेर संभाग के अध्यक्ष कैलाशचंद जैन मलैया ने कहा कि मानव जीवन पर सबसे बड़ा उपकार जिनवाणी माता का है। उनके बताए हुए मार्ग पर चलकर व्यक्ति सांसारिक दुखों से मुक्ति प्राप्त कर आत्मकल्याण की दिशा में अग्रसर हो सकता है। उन्होंने सभी श्रद्धालुओं से जिनवाणी के अध्ययन एवं उसके सिद्धांतों को जीवन में आत्मसात करने का आह्वान किया। समारोह के अंत में उपस्थित सभी श्रद्धालुओं का स्वागत एवं अभिनंदन करते हुए आभार व्यक्त किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन सुनील कुमार चौधरी ने किया। **-कैलाशचंद जैन मलैया**

श्रुत पंचमी पर जिनवाणी महोत्सव एवं मुनि संघ का भव्य मंगल प्रवेश

टोंक. शाबाश इंडिया

श्रुत पंचमी एवं जिनवाणी महोत्सव के पावन अवसर पर संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य आचार्य श्री 108 आर्जव सागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य निर्यापक मुनि श्री 108 विलोक सागर जी महाराज एवं मुनि श्री 108 विबोध सागर जी महाराज का श्री दिगंबर जैन नसिया में प्रातःकाल गाजे-बाजे और जयघोष के साथ भव्य मंगल प्रवेश हुआ। समाज के प्रवक्ता पवन जैन कंटान एवं कमल सर्राफ ने बताया कि मुनि संघ ने छावनी क्षेत्र से प्रातःकाल विहार प्रारंभ किया और बड़ा कुआं मार्ग से होते हुए श्री दिगंबर जैन नसिया में मंगल प्रवेश किया। इस अवसर पर समाजजनों ने श्रद्धापूर्वक पाद प्रक्षालन किया। इसके पश्चात मां जिनवाणी की अष्टद्रव्य से विधिवत पूजा-अर्चना एवं भक्ति की गई। अपने मंगल प्रवचन में मुनि श्री विलोक सागर जी महाराज ने श्रुत पंचमी और जिनवाणी माता के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज ही के दिन महान ग्रंथ 'षट्खंडागम' की रचना पूर्ण हुई थी, जिसमें मंगलाचरण के रूप में 'णमोकार महामंत्र' को लिपिबद्ध किया गया। उन्होंने कहा कि भगवान महावीर की दिव्य वाणी समस्त मानवता के लिए अमूल्य धरोहर है और उनके सिद्धांतों को जन-जन तक पहुंचाना प्रत्येक श्रावक का कर्तव्य है। मुनि श्री ने अपने पूर्व संस्मरण साझा करते हुए बताया कि वर्ष 2010 में मुनि श्री 108 सुधा सागर जी महाराज के चातुर्मास के दौरान वे ब्रह्मचारी रूप में टोंक आए थे। उन्होंने कहा कि टोंक की धर्मनिष्ठ जनता और यहां की धर्म प्रभावना सदैव प्रेरणादायी रही है। मुनि संघ का टोंक में कुछ दिनों का अल्पकालिक प्रवास रहेगा। कार्यक्रम में पदमचंद आड़रा, नरेंद्र फागी, प्रेमचंद झिराना, अनिल सर्राफ, विकास अतार, ओम ककोड़, मुकेश बरवास, जितेंद्र बनेठा, मनीष फागी, पप्पू नायक, नीटू छामुनिया, पारस दाखिया, धर्मचंद आड़रा एवं पत्तल दोना सहित बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित रहे।

दिगंबर जैन मंदिरों में श्रद्धापूर्वक मनाया गया श्रुत पंचमी पर्व, प्राचीन जैन ग्रंथों की निकली भव्य शोभायात्रा

सीकर. शाबाश इंडिया। सकल दिगंबर जैन समाज द्वारा जैन महिला मंडल के तत्वावधान में श्रुत पंचमी महापर्व श्रद्धा, भक्ति एवं उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर प्राचीन जैन ग्रंथों की भव्य शोभायात्रा निकाली गई तथा जिनवाणी माता का विधिवत पूजन-अर्चन किया गया। समाज के विवेक पाटोदी ने बताया कि श्रुत पंचमी वह ऐतिहासिक दिवस है, जब जैन धर्म की अमूल्य शिक्षाएं विशुद्ध मौखिक परंपरा (मुखपाठ) से निकलकर पहली बार ग्रंथ स्वरूप में लिपिबद्ध हुई थीं। इसी उपलक्ष्य में प्रातःकाल प्राचीन जैन ग्रंथों की शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा के समापन के बाद जाट बाजार स्थित दीवान जी की नसियां में जैन महिला मंडल के तत्वावधान में श्रुत पंचमी विधान का आयोजन किया गया। शोभायात्रा में समाज की महिलाओं एवं पुरुषों ने षट्खंडागम, जिनवाणी सहित अन्य प्राचीन जैन ग्रंथों को श्रद्धापूर्वक अपने मस्तक पर धारण कर भाग लिया। भक्तिमय वातावरण में निकली इस शोभायात्रा ने नगरवासियों का ध्यान आकर्षित किया। जैन महिला मंडल की अध्यक्ष किरण दीवान एवं मंत्री नीता छाबड़ा ने बताया कि श्रुत पंचमी जैन धर्म, विशेषकर दिगंबर परंपरा का एक अत्यंत पवित्र और ऐतिहासिक महापर्व है, जिसे प्रतिवर्ष ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को मनाया जाता है। यह दिन ज्ञान, शिक्षा और जिनवाणी माता की आराधना को समर्पित है तथा जैन शास्त्रों के संरक्षण और सम्मान का संदेश देता है। विवेक पाटोदी ने बताया कि भगवान महावीर के निर्वाण के पश्चात कई शताब्दियों तक जैन धर्म का ज्ञान गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से मौखिक रूप में सुरक्षित रहा। समय के साथ इस ज्ञान के लुप्त होने की आशंका को देखते हुए लगभग दो हजार वर्ष पूर्व गिरनार पर्वत की चंद्र गुफा में तपस्यारत आचार्य धरसेन ने अपने शिष्यों आचार्य पुष्पदंत एवं आचार्य भूतबली को इस दिव्य ज्ञान को लिपिबद्ध करने का निर्देश दिया। दोनों आचार्यों ने ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी के दिन ह्यषट्खंडागमह्ल जैसे महान ग्रंथ की रचना पूर्ण की। इस ऐतिहासिक उपलब्धि के उपलक्ष्य में देवों एवं स्थानीय जैन समाज ने ग्रंथ की भव्य पूजा-अर्चना की और तभी से यह पावन दिवस ह्यश्रुत पंचमीह्ल के रूप में मनाया जाने लगा।

दिगंबर जैन आदिनाथ जिनालय, छत्रपति नगर में श्रद्धाभाव से संपन्न हुआ श्रुत स्कंध विधान

राजेश जैन दद्दू

इंदौर. शाबाश इंडिया। दिगंबर जैन परंपरा का सर्वाधिक प्राचीन एवं प्रामाणिक ग्रंथ 'षट्खंडागम' जैन कर्म दर्शन का आधारभूत शास्त्र माना जाता है। आचार्य पुष्पदंत एवं आचार्य भूतबली द्वारा इस महान ग्रंथ की रचना एवं संरक्षण की स्मृति में देशभर का दिगंबर जैन समाज प्रतिवर्ष ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी को श्रुत पंचमी (श्रुत आराधना दिवस) के रूप में श्रद्धा एवं भक्ति के साथ मनाता है।

इसी पावन अवसर पर दिगंबर जैन महिला परिषद, अंजना संभाग, आदिनाथ शाखा, छत्रपति नगर, इंदौर के तत्वावधान में तीर्थ स्वरूप दिगंबर जैन आदिनाथ जिनालय, छत्रपति नगर में युवा विद्वान पंडित मनीष जैन के निर्देशन में श्रद्धा एवं भक्ति के साथ श्रुत स्कंध विधान का आयोजन किया गया। धर्म समाज प्रचारक राजेश जैन दद्दू ने बताया कि विधान का शुभारंभ प्रातःकाल नित्य-नियम पूजन, अभिषेक एवं शांतिधारा के साथ हुआ। शांतिधारा करने का सौभाग्य संगीत जैन एवं सचिन देवेंद्र जैन को प्राप्त हुआ। विधान प्रारंभ होने से पूर्व महिला परिषद की रजनी जैन, मनीषा जैन, मीना जैन एवं सुषमा जैन ने मंडल जी पर चार रजत मंगल कलश स्थापित किए, जबकि सुनीता नरेंद्र नायक को मंडल पर ग्रंथराज 'षट्खंडागम' विराजमान कराने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। विधान पूजन के दौरान श्रद्धालुओं ने श्रद्धा, भक्ति और उल्लास के साथ मंडल जी पर 64 अर्घ्य समर्पित किए। इस अवसर पर महिला परिषद इंदौर संभाग की अध्यक्ष मुक्ता जैन सहित पिंकी रेनबो, मनीषा टारगेट, समता सोधिया, सुरेखा रसिया, सुनीता देवरी, रवि देवी जैन, अजय (आजाद मामा), डी.एल. जैन, वीरेंद्र जैन, रमेश जैन, डॉ. जैनेंद्र जैन, अरविंद सोधिया, अखिलेश सोधिया, आलोक नेता एवं डॉ. वी.सी. जैन सहित अनेक समाजश्रेष्ठी एवं श्रद्धालु उपस्थित रहे।

भगवान के जन्म कल्याणक पर निकली भव्य शोभायात्रा

श्रुत पंचमी ज्ञान की आराधना का पर्व, आज ही लिपिबद्ध हुआ था 'षट्खंडागम' : मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को पंचकल्याणक महोत्सव में पधारने का दिया निमंत्रण

गुना. शाबाश इंडिया

नगर में आयोजित श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव, विश्व शांति महायज्ञ एवं त्रय गजरथ महोत्सव के अंतर्गत शुक्रवार को भगवान के जन्म कल्याणक के अवसर पर भव्य शोभायात्रा निकाली गई। परम पूज्य आध्यात्मिक संत, निर्यापक श्रमण, वास्तुविद, तीर्थ चक्रवर्ती एवं राष्ट्रसंत मुनि पुंगव श्री 108 सुधासागर जी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य तथा प्रतिष्ठाचार्य प्रदीप भइया सुयश (अशोकनगर) के निर्देशन में आयोजित इस शोभायात्रा का नगरवासियों ने जगह-जगह पुष्पवर्षा कर भव्य स्वागत किया। शोभायात्रा बैंड-बाजों एवं जयघोषों के साथ नगर के प्रमुख मार्गों से होकर निकली, जिससे पूरा वातावरण धर्ममय हो गया।

श्रुत पंचमी ज्ञान की आराधना का महापर्व : मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज

अपने प्रवचन में मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज ने कहा कि श्रुत पंचमी ज्ञान, शास्त्र और जिनवाणी की आराधना का पावन पर्व है। इसी दिन जैन धर्म के प्राचीनतम एवं महान ग्रंथ 'षट्खंडागम' को लिपिबद्ध किया गया था। जिनवाणी का संरक्षण और अध्ययन प्रत्येक श्रद्धालु का कर्तव्य है, क्योंकि यही आत्मकल्याण एवं मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करती है। मध्यप्रदेश महासभा संयोजक विजय धुर्रा के नेतृत्व में जैन समाज के प्रतिनिधिमंडल ने भोपाल पहुंचकर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को पंचकल्याणक महोत्सव एवं विश्व शांति महायज्ञ में पधारने का आमंत्रण दिया। इस अवसर पर प्रदेश सरकार के मंत्री विश्वास सारंग, कैलाश विजयवर्गीय, गोविंद सिंह राजपूत तथा पूर्व मंत्री सुरेंद्र पटवा सहित अन्य जनप्रतिनिधियों को भी निमंत्रण पत्र सौंपे गए। विजय धुर्रा ने बताया कि पहली बार एक साथ पंचमुखी पंचकल्याणक महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें सभी पात्रों को प्रत्येक धार्मिक क्रिया का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है।

बाल क्रीड़ा के माध्यम से बच्चों को दिए संस्कार : प्रतिष्ठाचार्य प्रदीप भइया

प्रतिष्ठाचार्य प्रदीप भइया ने कहा कि भगवान ने अपने जीवन में केवल बड़ों को ही नहीं, बल्कि बालकों को भी खेल-खेल में श्रेष्ठ संस्कार प्रदान किए। पंचकल्याणक महोत्सव के अंतर्गत आयोजित बाल क्रीड़ा में सैकड़ों बच्चों ने भाग लेकर अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने एवं सदाचार अपनाने का संकल्प लिया।

महोत्सव की प्रमुख झलकियां

17 से 22 जून 2026 तक आयोजित श्रीमज्जिनेन्द्र आदिनाथ जिनबिंब पंचमुखी त्रय गजरथ पंचकल्याणक महामहोत्सव के तृतीय दिवस पर प्रातःकाल अभिषेक, शांतिधारा एवं पूजन के साथ कार्यक्रमों का शुभारंभ हुआ। इसके बाद आदिकुमार जन्म, जन्म कल्याणक दरबार, अयोध्या नगरी की परिक्रमा एवं जन्माभिषेक शोभायात्रा आयोजित की गई। दोपहर में सत्येंद्र शर्मा पार्टी (दिल्ली) द्वारा नाटक एवं अयोध्या राजदरबार का मंचन हुआ, जबकि तीर्थंकर बालक की पालना झुलाने एवं बाल क्रीड़ा के आयोजन ने श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया। सायंकाल महाआरती, जिज्ञासा समाधान एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया। आयोजन समिति ने सभी धर्मप्रेमी बंधुओं से इस अद्भुत, ऐतिहासिक एवं दिव्य पंचकल्याणक महोत्सव में अधिक से अधिक संख्या में सहभागिता करने का आग्रह किया।

एसीपी अंजू यादव ने किया 'रंगमंच आपके द्वार' अभियान के पोस्टर का विमोचन

चौमूं. शाबाश इंडिया

श्री गीतागोपाल नाट्यकला संस्थान, चौमूं के तत्वावधान में संचालित होने वाले ''रंगमंच आपके द्वार'' अभियान के पोस्टर का विमोचन चौमूं एसीपी कार्यालय में सहायक पुलिस आयुक्त अंजू यादव एवं एसीपी कार्यालय के एच.एम. रीडर रामकुमार द्वारा किया गया। इस अवसर पर संस्थान अध्यक्ष, रंगमंच कलाकार एवं अभियान संयोजक गोल्ड मेडलिस्ट सुनील सोगण ने एसीपी अंजू यादव को अभियान की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि इसका उद्देश्य रंगमंच को जन-जन तक पहुंचाना तथा समाज में सकारात्मक जागरूकता का प्रसार करना है। उन्होंने बताया कि अभियान के अंतर्गत विद्यालयों, महाविद्यालयों, मोहल्लों तथा समाज के विभिन्न वर्गों के बीच सामाजिक सरोकारों, पर्यावरण संरक्षण, नशा मुक्ति, जल संरक्षण एवं देशभक्ति जैसे विषयों पर आधारित नाटकों का मंचन किया जाएगा। साथ ही बुजुर्गों, महिलाओं एवं बच्चों को रंगमंचीय गतिविधियों से जोड़ने के लिए विशेष प्रयास किए जाएंगे। सहायक पुलिस आयुक्त अंजू यादव ने इस अभियान को संस्कृति एवं रंगमंच के क्षेत्र में एक सराहनीय और प्रेरणादायक पहल बताते हुए इसकी प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि ऐसे अभियान समाज में जागरूकता फैलाने, सकारात्मक संदेश देने तथा युवाओं को रचनात्मक गतिविधियों से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

उन्होंने अभियान संयोजक सुनील सोगण द्वारा रंगमंच के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए अभियान की सफलता के लिए शुभकामनाएं भी दीं। संस्थान की ओर से बताया गया कि ''रंगमंच आपके द्वार'' अभियान पूर्णतः निःशुल्क रहेगा और इसका शुभारंभ 20 जून 2026 से किया जाएगा। अभियान के तहत विभिन्न स्थानों पर नाट्य प्रस्तुतियों, जनजागरूकता कार्यक्रमों एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा, ताकि समाज के सभी वर्गों को रंगमंच से जोड़कर सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन की दिशा में सार्थक पहल की जा सके।

लायंस क्लब जयपुर स्पार्कल की नई कार्यकारिणी का गठन

सेवा कार्यों की उपलब्धियों के साथ सत्र का हुआ समापन

जयपुर. शाबाश इंडिया। लायंस क्लब जयपुर स्पार्कल द्वारा गुरुवार, 18 जून 2026 को सत्र 2025-26 की अंतिम बैठक शहर के होटल ग्रैंड सफारी में सौहार्दपूर्ण एवं उत्साहपूर्ण वातावरण में आयोजित की गई। कार्यक्रम में पूरे वर्ष मानव सेवा, जीव दया एवं परोपकार के क्षेत्र में किए गए कार्यों की समीक्षा करते हुए नई कार्यकारिणी का गठन भी किया गया। क्लब की अध्यक्ष ला. सुजाता स्वर्णकार के नेतृत्व में वर्षभर विभिन्न सेवा कार्यों के माध्यम से कई नए आयाम स्थापित किए गए, जिन्हें पूरे डिस्ट्रिक्ट स्तर पर सराहना मिली। ग्वालियर में आयोजित अवॉर्ड सेरेमनी में क्लब को उत्कृष्ट कार्यों के लिए कई सम्मान भी प्राप्त हुए। क्लब की फाउंडर ला. महादेवी आर्य एवं अध्यक्ष ने अपने संबोधन में सभी सदस्याओं के सहयोग, समर्पण और आपसी सामंजस्य की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए भविष्य में भी इसी प्रकार क्लब को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने की अपेक्षा व्यक्त की। इस अवसर पर फाउंडर द्वारा अध्यक्ष को उपहार देकर सम्मानित किया गया, वहीं अध्यक्ष ने सभी सदस्याओं को उपहार भेंट कर उनका आभार व्यक्त किया। बैठक में अध्यक्ष एवं सचिव ने पूरे वर्ष की गतिविधियों और उपलब्धियों का विस्तृत प्रतिवेदन प्रस्तुत किया, जबकि कोषाध्यक्ष ला. मृदुला जैन ने आय-व्यय का विवरण रखा। इसके पश्चात सत्र 2026-27 के लिए नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। इसमें ला. राधा रानी मित्तल को अध्यक्ष, ला. सावित्री शर्मा को सचिव तथा ला. रश्मि भार्गव को कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया। नवनियुक्त पदाधिकारियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया गया तथा पूर्व अध्यक्ष, सचिव एवं कोषाध्यक्ष ने परंपरा के अनुसार उन्हें विधिवत कार्यभार सौंपा और नए सत्र के लिए शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम के दौरान क्लब के लिए एक और गौरवपूर्ण क्षण तब आया, जब पूर्व अध्यक्ष ला. रानी पाटनी को डिस्ट्रिक्ट स्तर पर जोन चेयरपर्सन नियुक्त किए जाने पर सभी सदस्याओं ने हर्ष व्यक्त करते हुए उन्हें शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर फाउंडर ला. महादेवी आर्य ने माल्यार्पण कर उनका सम्मान किया। बैठक के समापन पर सदस्याओं ने मधुर संगीत, चुटकुलों एवं एक-दूसरे को रोचक उपनाम (टाइटल) प्रदान कर आयोजन को यादगार बनाया और उत्साहपूर्वक नए सत्र के स्वागत का जश्न मनाया।

अज्ञान रूपी अंधकार को ज्ञान रूपी प्रकाश से दूर करने वाली जिनवाणी माता की श्रद्धा एवं उत्साह के साथ निकली शोभायात्रा

आचार्य श्री संघ का फुलेरा की ओर मंगल विहार, श्रद्धालुओं ने अश्रुपूरित नेत्रों से दी विदाई

जोबनेर. शाबाश इंडिया। उड़ गया पंछी रे हरी-भरी डाल से, रोको न रोको कोई गुरु को विहार से और ''अभी न जाओ छोड़कर कि दिल अभी भरा नहीं'' जैसे भावपूर्ण भजनों के बीच रमता योगी और बहता पानी की परंपरा को चरितार्थ करते हुए आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज ने अल्प प्रवास के उपरांत 19 जून को फुलेरा की ओर मंगल विहार किया। श्रद्धालुओं ने अश्रुपूरित नेत्रों से अपने गुरुदेव को भावभीनी विदाई दी। संघ का 19 जून को रात्रि विश्राम राहुल स्कूल में तथा 20 जून को आहार राजकीय विद्यालय, गुमानपुरा में निर्धारित है। 19 जून प्रातः श्रीजी के अभिषेक के उपरांत प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की अक्षुण्ण मूल बालब्रह्मचारी पट्ट परंपरा के पंचम पट्टाधीश आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज सहित 36 साधुओं के मंगल सानिध्य में जिनवाणी माता की भव्य शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा के पश्चात श्रद्धालुओं ने संघ सानिध्य में जिनवाणी माता का पूजन श्रद्धा एवं भक्ति भाव से किया। जोबनेर धर्मसभा में अपने प्रवचन के दौरान आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज ने कहा कि संसार रूपी समुद्र से पार लगाने वाली तथा अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करने वाली जिनवाणी माता की महिमा अद्वितीय है। उन्होंने बताया कि ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी के दिन षट्खंडागम ग्रंथ की रचना पूर्ण हुई थी तथा उसी अवसर पर ग्रंथ पूजन किया गया था। इसी कारण इस तिथि को श्रुतपंचमी के रूप में मनाया जाता है और शास्त्रों की शोभायात्रा निकालकर मंदिर में उनका विधिवत पूजन किया जाता है। डॉ. राजेश पंचोलिया के अनुसार आचार्य श्री ने आगे बताया कि आचार्य धरसेनाचार्य ने दो योग्य मुनि शिष्यों की खोज के लिए स्वप्न में दो श्वेत बैलों का दर्शन किया था। उन्होंने दोनों मुनिराजों की श्लोकों के माध्यम से परीक्षा ली। अशुद्ध मंत्रोच्चारण के कारण एक देवी एक नेत्र वाली तथा दूसरी देवी विकृत दंतों वाली प्रकट हुई। बाद में दोनों मुनियों ने व्याकरणानुसार मंत्रों की शुद्धि कर पुनः जाप किया, जिससे सुंदर देवियों का प्राकट्य हुआ। गुरु की परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर उन्हें जिनवाणी का ज्ञान प्रदान किया गया। उन्होंने उस ज्ञान को स्मृति में सुरक्षित रखते हुए शास्त्रों की रचना प्रारंभ की। आचार्य पुष्पदंत सागर जी एवं आचार्य भूतबली सागर जी ने ताड़पत्रों पर इन ग्रंथों का लेखन किया।

अवधपुरी में श्रुत पंचमी महोत्सव श्रद्धा एवं भक्ति के साथ सम्पन्न, जिनवाणी पूजन में उमड़ी श्रद्धालुओं की आस्था

आगरा. शाबाश इंडिया

श्री पद्मप्रभु जिनालय, अवधपुरी में जैन धर्म के ज्ञान एवं शास्त्र आराधना के महापर्व श्रुत पंचमी महोत्सव का आयोजन शुक्रवार को श्रद्धा, भक्ति एवं उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। प्रातःकाल से ही मंदिर परिसर में धर्मावलंबियों का आगमन प्रारंभ हो गया और बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने जिनवाणी माता के प्रति अपनी अटूट आस्था एवं भक्ति व्यक्त की। महोत्सव के दौरान महिलाओं ने मंगल गीतों के बीच भक्तिभावपूर्वक जिनवाणी माता को तीन परिक्रमा कराते हुए श्रीजी के समक्ष अर्पित किया। इसके पश्चात श्रद्धालुओं ने विधि-विधानपूर्वक श्रुत पंचमी जिनवाणी पूजन सम्पन्न कराया। पूजन के दौरान संपूर्ण मंदिर परिसर भक्तिमय वातावरण से गुंजायमान रहा तथा श्रद्धालुओं ने आगम शास्त्रों के महत्व का स्मरण करते हुए ज्ञान आराधना का संकल्प लिया। इस अवसर पर पंडित विवेक जैन शास्त्री ने कहा कि जैन धर्म में जिनवाणी को मोक्षमार्ग का सच्चा पथप्रदर्शक माना गया है। श्रुत पंचमी केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि ज्ञान, अध्ययन, स्वाध्याय एवं आत्मजागरण का संदेश देने वाला महापर्व है। उन्होंने सभी श्रद्धालुओं को जिनवाणी के अध्ययन एवं संरक्षण के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के समापन पर उपस्थित

श्रद्धालुओं ने धर्म प्रभावना, स्वाध्याय एवं आत्मकल्याण की मंगल भावनाओं के साथ आयोजन को सफल बनाया। इस अवसर पर प्रवीण जैन, इंद्रप्रकाश जैन, नरेंद्र कुमार जैन, रवि जैन, जयकुमार जैन, अतुल जैन, मनीष जैन, करुणा जैन, हेमलता जैन, कविता जैन, रंजना जैन, पुष्पा जैन, रागिनी जैन, रेनू जैन, बबली जैन, वंदना जैन, रीता जैन, शालू जैन सहित श्री पद्मप्रभु जिनालय परिवार के अनेक सदस्य उपस्थित रहे।

रिपोर्ट : शुभम जैन

जियो आईपीओ का इंतजार खत्म, 27 करोड़ शेयरों तक का फ्रेश इश्यू लाएगी कंपनी

मुंबई. शाबाश इंडिया

देश के सबसे चर्चित आईपीओ में से एक माने जा रहे जियो प्लेटफॉर्म्स के सार्वजनिक निर्गम की औपचारिक प्रक्रिया शुरू हो गई है। रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड ने स्टॉक एक्सचेंजों को दी सूचना में बताया कि जियो प्लेटफॉर्म्स लिमिटेड के बोर्ड ने 27 करोड़ इक्विटी शेयरों तक के फ्रेश इश्यू को मंजूरी दे दी है। इन शेयरों की फेस वैल्यू 10 रुपये प्रति शेयर होगी, जबकि इश्यू प्राइस का निर्धारण बुक बिल्डिंग प्रक्रिया के माध्यम से किया जाएगा।

बोर्ड ने दी डीआरएचपी को मंजूरी

रिलायंस इंडस्ट्रीज की 49वीं वार्षिक आम बैठक में चेयरमैन एवं मैनेजिंग डायरेक्टर मुकेश डी. अंबानी ने बताया कि जियो प्लेटफॉर्म्स के बोर्ड ने ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस को मंजूरी प्रदान कर दी है, जिसे भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड के समक्ष दाखिल किया जाएगा। कंपनी ने बीएसई और एनएसई को दी सूचना में भी स्पष्ट किया है कि आईपीओ सभी आवश्यक नियामकीय मंजूरियों के अधीन रहेगा।

शेयरधारकों के लिए भावनात्मक क्षण

एजीएम को संबोधित करते हुए मुकेश अंबानी ने इसे रिलायंस परिवार और उसके लाखों शेयरधारकों के लिए भावनात्मक क्षण बताया। उन्होंने कहा कि रिलायंस और उसके निवेशकों के बीच गर्व, विश्वास, सम्मान और साझा विकास पर आधारित एक गहरा एवं पवित्र संबंध है। उन्होंने कहा, ''जियो की प्रस्तावित लिस्टिंग दुनिया को यह दिखाएगी कि भारत वैश्विक स्तर, वैश्विक क्षमता और वैश्विक मूल्य वाली टेक्नोलॉजी कंपनियां बनाने में सक्षम है। मैं सभी मौजूदा और संभावित निवेशकों को आश्वस्त करता हूं कि जियो का भविष्य और भी उज्ज्वल है।''

वैल्यू अनलॉक का बड़ा अवसर

मुकेश अंबानी ने कहा कि इस वर्ष वैल्यू क्रिएशन की दिशा में सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि जियो

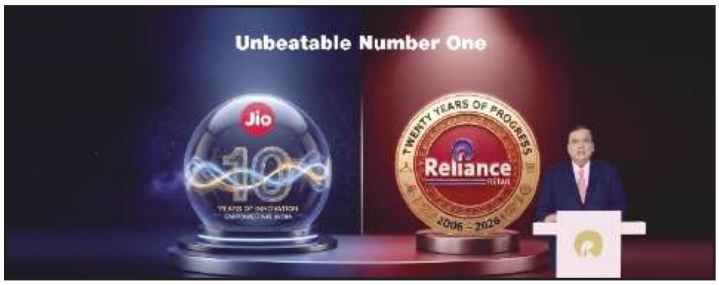

का प्रस्तावित आईपीओ होगा। उनके अनुसार, इससे रिलायंस के मौजूदा शेयरधारकों के लिए बड़ा वैल्यू अनलॉक होगा और नए निवेशकों को आकर्षक निवेश अवसर प्राप्त होंगे। उन्होंने कहा कि पिछले एक दशक में जियो ने भारत के डिजिटल परिदृश्य को पूरी तरह बदल दिया है। जिस समय कंपनी ने अपनी यात्रा शुरू की थी, उस समय वॉइस कॉल महंगी, डेटा महंगा और इंटरनेट स्पीड सीमित थी। जियो ने वॉइस सेवाओं को मुफ्त तथा हाई-स्पीड डेटा को किफायती बनाकर डिजिटल क्रांति को नई दिशा दी। वर्तमान में जियो का यूजर बेस 52.4 करोड़ से अधिक हो चुका है। कंपनी के 5जी सब्सक्राइबर 26.8 करोड़ से ज्यादा हैं, जो चीन के बाहर किसी एक देश के ऑपरेटर के लिए सबसे बड़ा आंकड़ा है। वहीं जियोएयरफाइबर 1.3 करोड़ कनेक्टेड होम्स तक पहुंच चुका है और कंपनी दुनिया की सबसे बड़ी फिक्स्ड वायरलेस ब्रॉडबैंड ऑपरेटर बन गई है। जियो की आगामी विकास यात्रा पांच प्रमुख प्रतिबद्धताओं पर आधारित होगी। इनमें जियो टू 5जी को भारत की अगली डिजिटल छलांग की नींव बनाना, जियोएयरफाइबर के माध्यम से देशभर में हाई-स्पीड होम ब्रॉडबैंड पहुंचाना, भारतीय उद्यमों एवं छोटे कारोबारों का डिजिटलीकरण, हर व्यक्ति तक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की पहुंच सुनिश्चित करना तथा भारत की टेक्नोलॉजी को वैश्विक स्तर तक ले जाना शामिल है। जियो आईपीओ की औपचारिक प्रक्रिया केवल एक लिस्टिंग इवेंट नहीं, बल्कि भारत की तकनीकी क्षमता, रिलायंस के शेयरधारकों के लिए वैल्यू अनलॉक और जियो की अगली विकास यात्रा की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर मानी जा रही है।

जिनवाणी के ज्ञान का पावन पर्व है श्रुत पंचमी : नीति जैन

मुरैना/अम्बाह (मनोज जैन नायक)

श्रुत पंचमी जैन धर्म का गौरवशाली एवं पवित्र पर्व है, जो ज्ञान की अगाध महिमा, शास्त्रों के संवर्धन तथा समृद्ध संस्कृति के संरक्षण की प्रेरणा देता है। यह पर्व जिनवाणी, आगमों और शास्त्रों के अध्ययन, स्वाध्याय तथा आत्मचिंतन का विशेष अवसर है। श्रुत पंचमी के अवसर पर अपने संदेश में श्रीमती नीति जैन ने कहा कि यह पर्व हमें जिनवाणी के प्रति श्रद्धा, अध्ययन और आत्मकल्याण का मार्ग दिखाता है। उन्होंने बताया कि इसी दिन आचार्य पुष्पदंत एवं आचार्य भूतबलि महाराज ने जैन धर्म के प्रथम लिखित ग्रंथ 'षट्खण्डागम' की रचना पूर्ण की थी। इस ऐतिहासिक कार्य के माध्यम से भगवान महावीर की दिव्य देशना को लिपिबद्ध स्वरूप प्राप्त हुआ, जो आज भी अनगिनत श्रद्धालुओं के लिए ज्ञान का अमूल्य स्रोत बनी हुई है। श्रीमती नीति जैन ने कहा कि जिनवाणी केवल ग्रंथ नहीं, बल्कि वह दिव्य प्रकाश है जो हमें सत्य, अहिंसा, संयम और मोक्ष के मार्ग पर चलना सिखाती है। यह हमें क्रोध, मान, माया और लोभ जैसे कषायों का त्याग कर प्रेम, करुणा, क्षमा और सदाचार को अपनाने की प्रेरणा देती है। उन्होंने कहा, ''ज्ञान ही वह दीपक है, जो जीवन के अंधकार को दूर कर मोक्ष के मार्ग को प्रकाशित करता है।'' श्रुत पंचमी केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि अपने भीतर ज्ञान का दीप प्रज्वलित करने का पावन पर्व है। श्रुत पंचमी के अवसर पर उन्होंने सभी से आगमों का गहन अध्ययन एवं मनन करने, अर्जित ज्ञान को अपने जीवन और आचरण में उतारने, अहिंसा, सत्य एवं अनेकांतवाद के मार्ग पर दृढ़ता से चलने तथा अपने संस्कारों और आध्यात्मिक विरासत को सुरक्षित रखते हुए अगली पीढ़ी तक पहुँचाने का आह्वान किया। अंत में उन्होंने मंगलकामना व्यक्त करते हुए कहा कि ज्ञान की यह पावन धारा सभी के जीवन को आलोकित करे और प्रत्येक व्यक्ति आत्मकल्याण के मार्ग पर निरंतर अग्रसर हो। यही श्रुत पंचमी महापर्व का वास्तविक संदेश और उद्देश्य है।

रक्त शोधन यानी रक्त को साफ रखने के घरेलू उपाय

आप कितना भी अच्छा आहार लें और नियमित व्यायाम करें, लेकिन यदि शरीर का समुचित स्वास्थ्य नहीं है तो इसका असर त्वचा, पाचन और ऊर्जा स्तर पर दिखाई दे सकता है। आम बोलचाल में लोग इसे ''खून की खराबी'' कहते हैं, जबकि आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में ऐसा कोई सामान्य निदान नहीं है। त्वचा पर दाने, फुंसियां या अन्य समस्याओं के कई कारण हो सकते हैं, इसलिए लगातार परेशानी होने पर चिकित्सकीय सलाह अवश्य लें। आयुर्वेद में कुछ प्राकृतिक जड़ी-बूटियों और खाद्य पदार्थों का उल्लेख मिलता है, जो शरीर के समग्र स्वास्थ्य और चयापचय को बेहतर बनाने में सहायक माने जाते हैं।

1. नीम का प्रयोग

रक्त शोधन के लिए आयुर्वेद में नीम का विशेष महत्व बताया गया है। सुबह खाली पेट नीम की कोमल पत्तियां या कोपलें सीमित मात्रा में चबाई जा सकती हैं। हालांकि इसका सेवन विशेषज्ञ की सलाह से करना अधिक उचित रहता है।

2. चिरायता का सेवन

चिरायता को आयुर्वेद में कड़वी औषधि माना गया है। इसकी पत्तियों या चूर्ण का सेवन पारंपरिक रूप से किया जाता रहा है, लेकिन मात्रा और अवधि के लिए आयुर्वेद विशेषज्ञ की सलाह लेना आवश्यक है।

3. अदरक और नींबू

अदरक के छोटे टुकड़े में कुछ बूंदें नींबू का रस, चुटकीभर काला नमक और काली मिर्च मिलाकर सेवन करने से पाचन क्रिया को लाभ मिल सकता है।

4. बेल का सेवन

पके हुए बेल के गूदे में स्वादानुसार देशी खांड या गुड़ मिलाकर सेवन करना पाचन तंत्र के लिए लाभकारी माना जाता है।

5. हल्दी

हल्दी में पाया जाने वाला करक्यूमिन एंटीऑक्सीडेंट और सूजन-रोधी गुणों से युक्त होता है। नियमित एवं संतुलित मात्रा में इसका सेवन स्वास्थ्य के लिए लाभदायक माना जाता है।

6. लहसुन

सुबह खाली पेट 1-2 लहसुन की कलियों का सेवन हृदय स्वास्थ्य और रोग प्रतिरोधक क्षमता के लिए उपयोगी माना जाता है। हालांकि जिन लोगों को गैस्ट्रिक समस्या या रक्त पतला करने वाली दवाएं चल रही हों, उन्हें सावधानी बरतनी चाहिए।

7. तुलसी

प्रतिदिन सीमित मात्रा में तुलसी की पत्तियों का सेवन शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायक माना जाता है।

8. आंवला

आंवला विटामिन-सी का उत्कृष्ट स्रोत है। यह रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने और शरीर के समग्र स्वास्थ्य को बनाए रखने में सहायक होता है।

9. गन्ने का रस

ताजा और स्वच्छ परिस्थितियों में निकाला गया गन्ने का रस शरीर को ऊर्जा प्रदान करता है। मधुमेह के रोगियों को इसका सेवन चिकित्सकीय सलाह के अनुसार करना चाहिए।

10. मेथी

रातभर भिगोए हुए मेथी के दानों का सीमित मात्रा में सेवन पाचन और मेटाबॉलिज्म के लिए लाभकारी माना जाता है।

महत्वपूर्ण सलाह

संतुलित आहार लें।

पर्याप्त मात्रा में पानी पिएं।

नियमित व्यायाम करें।

धूम्रपान और अत्यधिक शराब के सेवन से बचें।

यदि त्वचा संबंधी समस्याएं, बार-बार संक्रमण या अन्य लक्षण लंबे समय तक बने रहें तो स्वयं उपचार करने के बजाय योग्य चिकित्सक से परामर्श अवश्य लें।

डॉ. पीयूष त्रिवेदी
आयुर्वेद एवं एक्यूप्रेशर विशेषज्ञ, जयपुर

जैन मंदिर कोडरमा में श्रद्धा एवं उल्लास के साथ मनाया गया श्रुत पंचमी महापर्व

झुमरी तिलैया. शाबाश इंडिया

जैन समाज, कोडरमा के श्रद्धालु भक्तों ने स्थानीय जैन मंदिर में ज्ञान आराधना के महापर्व श्रुत पंचमी को श्रद्धा एवं भक्ति भाव के साथ मनाया। श्रुत पंचमी के शुभ अवसर पर प्रातःकाल जैन मंदिर में श्रुत स्कंध यंत्र का अभिषेक किया गया तथा स्थानीय पंडित अभिषेक जैन शास्त्री के मुखारविंद से शांतिधारा का वाचन संपन्न हुआ। इस दौरान विशेष भक्त परिवारों को शांतिधारा एवं अन्य धार्मिक अनुष्ठानों का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसके उपरांत मंदिर प्रांगण में प्रभात फेरी निकाली गई, जिसमें श्रद्धालुओं ने श्रुत जिनवाणी को मस्तक पर धारण कर मंदिर की परिक्रमा की। इस भव्य आयोजन में जैन समाज के युवक-युवतियां एवं महिलाएं केसरिया परिधान में शामिल हुए। जयघोषों के बीच भक्तिभाव से ओत-प्रोत श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक परिक्रमा की। प्रभात फेरी के पश्चात मंदिर सभागार में नित्य पूजन के बाद शास्त्र पूजन एवं श्रुत स्कंध विधान का संगीतमय एवं भक्तिपूर्ण आयोजन किया गया। इस अवसर पर पंडित अभिषेक जैन शास्त्री ने श्रुत पंचमी के ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि दिगंबर जैन परंपरा के अनुसार ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी को श्रुत पंचमी पर्व मनाया जाता है। लगभग 2100 वर्ष पूर्व गिरनार पर्वत की चंद्रगुफा में आत्मआराधना में लीन आचार्य धरसेन ने अपने अल्पायु होने का आभास होने पर मुनिराज सुबुद्धि (आचार्य पुष्पदंत) एवं मुनिराज नरवाहन (आचार्य भूतबली) को षट्खंडागम का दिव्य ज्ञान प्रदान किया। आचार्य पुष्पदंत ने ताड़पत्रों पर प्रथम खंड 'जीवट्ठाण' का लेखन किया, जिसकी मंगलाचरण के रूप में शुरूआत णमोकार महामंत्र से हुई। शेष पांच खंड–खुद्दाबंध, बंध स्वामित्व विचय, वेदना खंड, वर्गणा खंड एवं महाबंध–का लेखन आचार्य भूतबली द्वारा किया गया। छहों खंडों के पूर्ण होने के उपरांत ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी के दिन गुजरात के अंकलेश्वर नगर में चतुर्विध संघ की उपस्थिति में प्रथम श्रुत स्कंध 'षट्खंडागम' की महापूजा-अर्चना महोत्सवपूर्वक संपन्न हुई। तभी से यह तिथि श्रुत पंचमी महापर्व के रूप में मनाई जाती है। पर्व के उपलक्ष्य में सायंकाल जैन समाज एवं आचार्य विद्यासागर जैन पाठशाला के तत्वावधान में महाआरती के बाद जिनवाणी ग्रंथ के महत्व एवं विशेषताओं पर प्रवचन आयोजित किया गया। तत्पश्चात श्रद्धालुओं ने जिनवाणी को पालने में विराजमान कर भक्तिभाव से पालना झुलाया।

सिद्ध श्री माताजी के सानिध्य में हर्षोल्लास से मनाया गया श्रुत पंचमी महापर्व

कलिंजरा में 2026 चातुर्मास की घोषणा

नौगामा (जिला बांसवाड़ा). शाबाश इंडिया

परम पूज्य आचार्य गुरुवर विभव सागर जी महाराज की शिष्या सिद्ध श्री माताजी के पावन सानिध्य में शुक्रवार को श्रुत पंचमी महापर्व श्रद्धा, भक्ति एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रातःकाल वागड़ के बड़े बाबा भगवान आदिनाथ एवं भगवान नेमिनाथ की शांतिधारा सिद्ध श्री माताजी के मुखारविंद से संपन्न हुई। शांतिधारा के उपरांत श्रुत पंचमी के अवसर पर श्रुत स्कंध यंत्र एवं हस्तलिखित जिनवाणी की भव्य शोभायात्रा निकाली गई। वर्षा की रिमझिम फुहारों के बीच निकली इस शोभायात्रा में श्रद्धालु जयघोष करते हुए पंडाल तक पहुंचे। पंडाल में श्रुत स्कंध यंत्र का अभिषेक करने का सौभाग्य संदीप कुमार पंचोली को प्राप्त हुआ। इसके बाद श्रद्धालुओं ने अष्टद्रव्यों से सुसज्जित थालों के साथ मधुर वाद्य यंत्रों की स्वर लहरियों एवं गरबा नृत्य के बीच भगवान आदिनाथ तथा जिनवाणी की भक्तिभावपूर्वक पूजा-अर्चना की। इस अवसर पर सिद्ध श्री माताजी ने कहा कि यहां के बालक-बालिकाओं ने पिछले दो माह से जिनवाणी संरक्षण का सराहनीय कार्य किया है, जो अत्यंत प्रेरणादायी है। उन्होंने सभी बच्चों को आशीर्वाद प्रदान किया, वहीं समाज की ओर से उनका स्वागत एवं अभिनंदन भी किया गया। कार्यक्रम के दौरान ग्राम कलिंजरा जैन समाज की ओर से चातुर्मास हेतु श्रीफल अर्पित किया गया। इस अवसर पर सिद्ध श्री माताजी ने सभी श्रद्धालुओं को आशीर्वाद देते हुए वर्ष 2026 का चातुर्मास कलिंजरा नगर में करने की घोषणा की, जिससे उपस्थित समाजजनों में हर्ष की लहर दौड़ गई। श्रुत पंचमी की महिमा का वर्णन करते हुए माताजी ने कहा कि यह केवल एक पर्व नहीं, बल्कि शास्त्रों के संरक्षण का संकल्प दिवस है। यह हमें अपने प्राचीन ग्रंथों, लिपियों और ज्ञान-भंडार के संरक्षण, अध्ययन तथा आने वाली पीढ़ियों तक इस दिव्य ज्ञान को पहुंचाने की प्रेरणा देता है। उन्होंने कहा कि श्रुत पंचमी ज्ञान की आराधना का महापर्व है, जो मानव को अज्ञान रूपी अंधकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर अग्रसर होने का संदेश देता है। कार्यक्रम का संचालन विधानाचार्य रमेश चंद्र गांधी एवं सुभाष चंद्र नानावटी ने किया, जबकि आभार जैन समाज अध्यक्ष विपुल पंचोली ने व्यक्त किया। उक्त जानकारी जैन समाज प्रवक्ता सुरेश चंद्र गांधी ने दी।

77 वरिष्ठ नागरिकों, दिव्यांगजनों एवं जरूरतमंदों को 385 निःशुल्क सहायक उपकरण वितरित

जयपुर. शाबाश इंडिया। मानव सेवा ट्रस्ट राजस्थान एवं रैगर समाज पंचायत सेवा संस्था के संयुक्त तत्वावधान में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा संचालित राष्ट्रीय वयोश्री योजना एवं एडीप योजना के अंतर्गत शिव मंदिर धर्मशाला, रैगर मोहल्ला, झोटवाड़ा में एल्मिको के सहयोग से वरिष्ठ नागरिकों एवं दिव्यांगजनों के लिए निःशुल्क दैनिक जीवन सहायक उपकरण वितरण शिविर का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि समग्र क्षेत्रीय केंद्र (उफ्ठ) जयपुर के निदेशक नीरज मधुकर ने कहा कि केंद्र सरकार की इन योजनाओं का उद्देश्य वरिष्ठ नागरिकों एवं दिव्यांगजनों को आत्मनिर्भर बनाकर उनके जीवन को अधिक सुगम, सुरक्षित एवं सम्मानजनक बनाना है। स्वास्थ्य कल्याण होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज एवं रिसर्च सेंटर के वरिष्ठ होम्योपैथ, आचार्य, चिकित्सक, ट्रस्ट सदस्य एवं मीडिया प्रभारी प्रो. डॉ. राजीव सक्सेना ने बताया कि शिविर में 77 लाभार्थियों को उनकी आवश्यकतानुसार कुल 385 सहायक उपकरण वितरित किए गए। इनमें व्हीलचेयर, श्रवण यंत्र, वॉकर, छड़ियां, कमर बेल्ट, कंधा बेल्ट तथा अन्य दैनिक जीवन उपयोगी सहायक उपकरण शामिल रहे। मानव सेवा ट्रस्ट के प्रबंध निदेशक कौशल सत्यार्थी ने बताया कि संस्था भविष्य में भी समाज के वंचित एवं जरूरतमंद वर्गों के लिए ऐसे जनकल्याणकारी कार्यक्रमों का आयोजन निरंतर करती रहेगी।

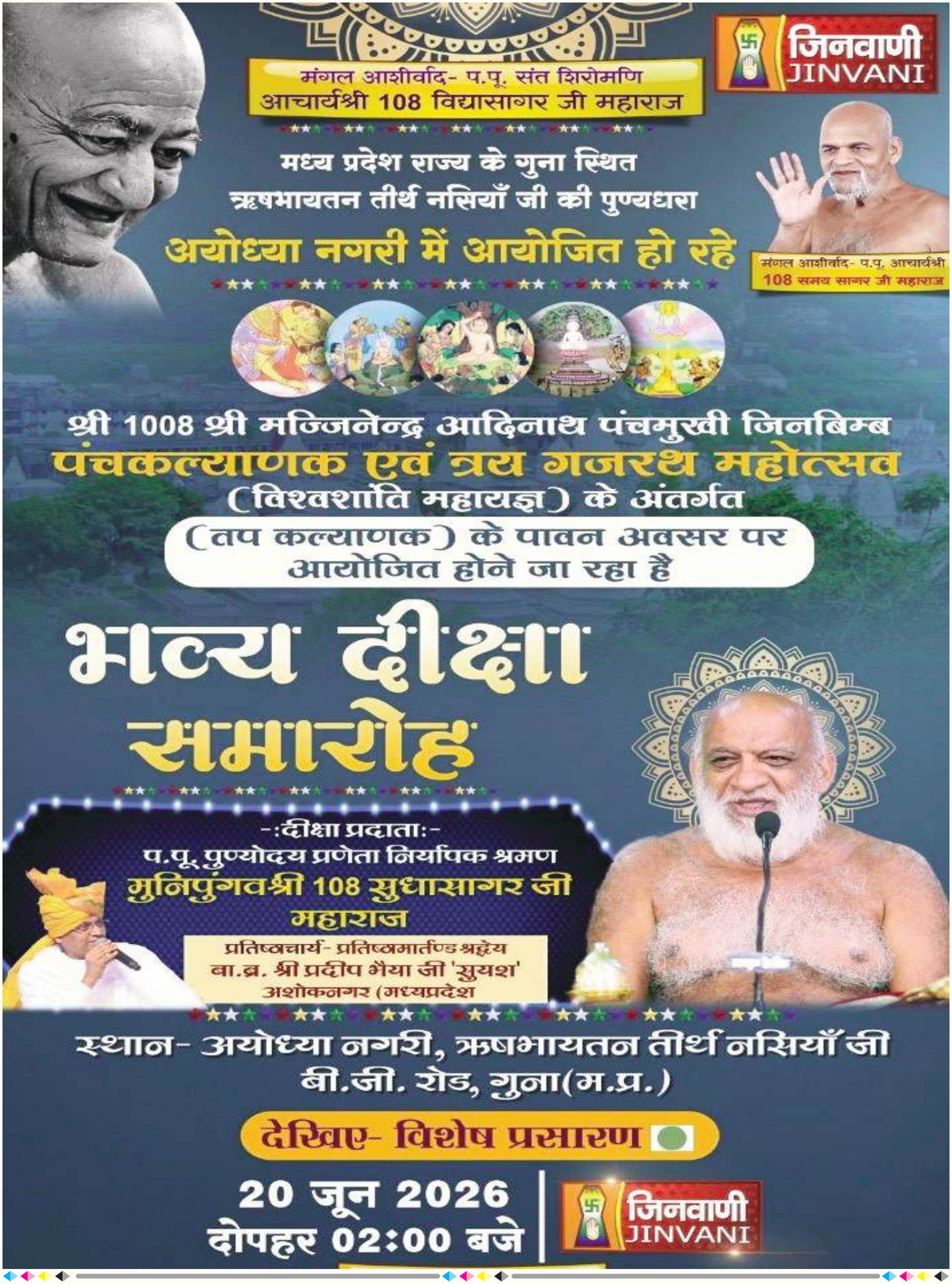
जिनवाणी
JINVANI
मंगल आशीर्वाद- प.पू. संत शिरोमणि
आचार्यश्री 108 विद्यासागर जी महाराज
मध्य प्रदेश राज्य के गुना स्थित
ऋषभायतन तीर्थ नसियाँ जी की पुण्यधरा
अयोध्या नगरी में आयोजित हो रहे
मंगल आशीर्वाद- प.पू. आचार्यश्री
108 समय सागर जी महाराज
श्री 1008 श्री मज्जिनेन्द्र आदिनाथ पंचमुखी जिनबिम्ब
पंचकल्याणक एवं त्रय गजरथ महोत्सव
(विश्वशांति महायज्ञ) के अंतर्गत
(तप कल्याणक) के पावन अवसर पर
आयोजित होने जा रहा है
भव्य दीक्षा
समारोह
-:दीक्षा प्रदाता:-
प.पू. पुण्योदय प्रणेता निर्यापक श्रमण
मुनिपुंगवश्री 108 सुधासागर जी
महाराज
प्रतिष्ठाचार्य- प्रतिष्ठामार्तण्ड श्रद्धेय
बा.ब्र. श्री प्रदीप भैया जी 'सुयश'
अशोकनगर (मध्यप्रदेश
स्थान- अयोध्या नगरी, ऋषभायतन तीर्थ नसियाँ जी
बी.जी. रोड, गुना(म.प्र.)
देखिए- विशेष प्रसारण
20 जून 2026
दोपहर 02:00 बजे
जिनवाणी
JINVANI

वरघोड़े में गूंजे तीर्थंकरों के जयकारे, श्रद्धा एवं भक्ति के माहौल में मंदिर शिखर पर चढ़ी वार्षिक ध्वजा

श्रद्धा एवं भक्ति के साथ मनाया गया श्री संभवनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर का 16वां वार्षिक ध्वजा एवं वर्षगांठ महोत्सव

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

शहर के बापूनगर स्थित श्री संभवनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर का 16वां वार्षिक ध्वजा एवं मंदिर वर्षगांठ महोत्सव शुक्रवार को श्रद्धा, भक्ति एवं उल्लासपूर्ण वातावरण में मनाया गया। मेवाड़ देशोद्धारक आचार्य श्री जितेन्द्र सूरिश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न आचार्य श्री निपूणरत्न विजय सूरिश्वरजी म.सा. एवं पूज्य राजरत्न विजयजी म.सा. की प्रेरणा एवं पावन आशीर्वाद से आयोजित इस महोत्सव के अंतर्गत विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान, पूजन एवं सामूहिक कार्यक्रम संपन्न हुए। वर्षगांठ दिवस पर कार्यक्रम का शुभारंभ भव्य वरघोड़े के साथ हुआ। गाजे-बाजे एवं तीर्थंकर परमात्मा के जयघोषों के बीच कायमि ध्वजा के लाभार्थी धर्मनिष्ठ प्रभादेवी, मनीष-ममता बापना परिवार के निवास से वरघोड़ा प्रारंभ होकर बापूनगर क्षेत्र के प्रमुख मार्गों से होते हुए मंदिर परिसर पहुंचा। इसके पश्चात प्रातः 8:15 बजे विधि-विधान के साथ तीर्थंकर परमात्मा की स्नात्र पूजा एवं सत्रह भेदी पूजा का आयोजन हुआ, जिसका वाचन अनिल बालर, सतीश सेठ, अभिषेक नाहर एवं नयन सेठ ने किया। सुबह 10:15 बजे शुभ मुहूर्त में तीर्थंकर विमलनाथ भगवान, तीर्थंकर संभवनाथ भगवान एवं नाकोड़ा भैरव देव के जयघोषों के मध्य मंदिर शिखर पर कायमि ध्वजा चढ़ाने का सौभाग्य धर्मनिष्ठ प्रभादेवी, मनीष-ममता, प्रणय एवं प्रियांश बापना परिवार को प्राप्त हुआ। वार्षिक चढ़ावा कार्यक्रम का संचालन करते हुए मंदिर समिति के कुलदीप गुगलिया ने गत एक वर्ष में कार्यकारिणी द्वारा किए गए कार्यों तथा मंदिर परिसर में चल रहे मरम्मत एवं विकास कार्यों की जानकारी दी। श्रद्धालुओं ने मंदिर समिति द्वारा संचालित सेवा एवं भक्ति कार्यों की सराहना करते हुए अनुमोदना व्यक्त की। महोत्सव के दौरान विभिन्न पूजन लाभ भी श्रद्धालु परिवारों ने प्राप्त किए। पक्षाल पूजा का लाभ विमलादेवी ऋषभ महात्मा परिवार, चंदन पूजा का लाभ मनीष कुमार-अभिमन्यु बोलिया परिवार, केसर पूजा का लाभ यश कुमार कोठारी, पुष्प पूजा का लाभ उर्मिलादेवी-सतीश कुमार चौधरी परिवार, धूप पूजा का लाभ राजमल, अमित कुमार एवं पलक्ष कुमार सिंदुरिया परिवार, दीपक पूजा का लाभ चंदना-बलवंत मेहता परिवार, अंगलुंछड़ा-खुस कूची का लाभ विमलभाई नागोत्रा परिवार तथा नाकोड़ा भैरव देव के दीपक का लाभ उर्मिलादेवी-पंकज लोढ़ा परिवार ने प्राप्त किया। सभी लाभार्थी परिवारों का मंदिर समिति के अध्यक्ष मनीष बापना, मंत्री दिनेश गोलेछा एवं अन्य पदाधिकारियों द्वारा स्वागत एवं बहुमान किया गया। कार्यक्रम का मंच संचालन कुलदीप गुगलिया ने किया। वर्षगांठ दिवस पर सायंकालीन आरती का लाभ भी कायमि ध्वजा के लाभार्थी बापना परिवार ने प्राप्त किया। वार्षिक ध्वजा महोत्सव में मंदिर समिति के संरक्षक बलवंत मेहता, सुशीलादेवी सिंघवी, उपाध्यक्ष गुणवंत जैन, कोषाध्यक्ष अनिल विश्नोत सहित राजमल सिंदुरिया, मनोज महात्मा, मनोज डोसी, संजय सिंघवी, संजय लोढ़ा, पंकज लोढ़ा, विवेक खाब्या, सुनील कर्णावट एवं जितेंद्र आंचलिया सहित बापूनगर श्री सकल जैन समाज के सदस्यों का सक्रिय सहयोग रहा। आयोजन को सफल बनाने में मंदिर की डिजिटल मीडिया टीम कनिका गुगलिया, नमन गोलेछा, युग कावड़िया एवं संयम कर्णावट का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। लाभार्थी परिवार की ओर से साधार्मिक स्वामी वात्सल्य का आयोजन किया गया। दो दिवसीय महोत्सव के सफल आयोजन पर मंदिर समिति ने सभी श्रद्धालुओं एवं सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

हमारी पूज्यनीया

प्रबन्धकारिणी समिति, जौहरी बाजार दि० जैन महिला समिति की अध्यक्ष

डॉ. श्रीमती शीला जैन

प्रमुख समाज सेविका, कर्मठ कार्यकर्ता,
एवं समिति की आधार स्तंभ, के आकस्मिक स्वर्गवास पर
हम सभी अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं

श्रद्धावनत

श्रीमती नमिता छाबड़ा, श्रीमती काजल छाबड़ा, श्रीमती स्वर्णलता अजमेरा, श्रीमती उषा जैन आगरा **(परम संरक्षक)**, श्रीमती प्रभा शाह (एडवोकेट), श्रीमती विद्या कासलीवाल **(मुख्य संरक्षक)**, श्रीमती उमराव देवी बिन्दायका, श्रीमती मंजू पाटनी, श्रीमती मंजू पाटनी (दरोगाजी), श्रीमती उर्मिला शाह, श्रीमती दर्शन शाह, श्रीमती रविकान्ता गोधा, श्रीमती शकुन्तला गोधा, श्रीमती विजयलक्ष्मी छाबड़ा, श्रीमती शकुन्तला सोनी, श्रीमती कान्ता गोधा, श्रीमती चम्पा गोधा, श्रीमती प्रभा गोधा, श्रीमती सुशीला बेलेवाला, श्रीमती बीना गोधा, श्रीमती मीना मोठया, श्रीमती रेखा संघी, श्रीमती पूजा बज, श्रीमती सरोज अजमेरा, श्रीमती अनिला पाटनी, श्रीमती नीलम सोगानी, श्रीमती मंजू बिन्दायका **(संरक्षक)**, श्रीमती इन्द्रा चांदकीका, श्रीमती मीनाक्षी जैन **(वरिष्ठ उपाध्यक्ष)**, श्रीमती कविता अजमेरा, श्रीमती संगीता छाबड़ा **(उपाध्यक्ष)**, श्रीमती पुष्पा सोगानी (एडवोकेट) **(मंत्री)**, श्रीमती सुधा शाह, श्रीमती ममता शाह (एडवोकेट), श्रीमती बबीता सोगानी, श्रीमती बीना सोगानी **(संयुक्त मंत्री)**, श्रीमती तरूणा संघी **(कोषाध्यक्ष)**, श्रीमती उमा पाटनी, श्रीमती अर्चना पाटनी **(सांस्कृतिक मंत्री)** डॉ. साधना गोदीका, श्रीमती नीरा लुहाड़िया **(प्रचार मंत्री)**, श्रीमती प्रतिभा पाटनी, श्रीमती कुसुम सोगानी **(संगठन मंत्री)**, श्रीमती सरोज सोगानी **(पुस्तकालय मंत्री)**, श्रीमती सुधा बैद **(स्वास्थ्य मंत्री)**, श्रीमती करूणा बाकलीवाल, श्रीमती राज गोधा **(भंडार व्यवस्थापक)**, श्रीमती इन्दु संघी, श्रीमती अनिला लोंग्या, श्रीमती निधी बोहरा, श्रीमती अनिता छाबड़ा, श्रीमती अलका शाह, श्रीमती नलिनी कटारिया, श्रीमती वन्दना अजमेरा, श्रीमती कल्पना लुहाड़िया, श्रीमती सीमा लोंग्या, श्रीमती आरती सोनी, श्रीमती मीनाक्षी सोनी, श्रीमती रितु पापड़ीवाल, श्रीमती रीना ठोलिया, श्रीमती सीमा नागौरी, श्रीमती पिंकी शाह, श्रीमती संगीता सोगानी, श्रीमती दीपिका जैन श्रीमती आरती अजमेरा, श्रीमती शीला पाटनी, श्रीमती भावना छाबड़ा **(कार्यकारिणी सदस्य)**

एवं समस्त सदस्याएं

समस्त स्टाफ - संस्कार उद्यम, श्री आदिनाथ स्वास्थ्य निधि आश्रम, श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन भोजनालय, श्री आदिनाथ स्वास्थ्य निधि चिकित्सालय एवं डायग्नोस्टिक सेन्टर, संस्कार उद्यम

नोट - प्रबन्धकारिणी समिति, जौहरी बाजार दि० जैन महिला समिति की श्रद्धांजलि सभा दिनांक 20.06.26 को शाम 7:30 बजे जैन भवन, भट्टारक जी की नसियां, नारायण सिंह सर्किल, जयपुर पर होगी ।

श्री दिगम्बर जैन मंदिर चंद्रप्रभजी, दुर्गापुरा में हर्षोल्लास से मनाया गया श्रुत पंचमी महापर्व

पहली बार हुई 108 माँ जिनवाणी की स्थापना, आचार्य प्रज्ञासागर महाराज ने 2026 के चातुर्मास स्थल की घोषणा की

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री दिगम्बर जैन मंदिर चंद्रप्रभजी ट्रस्ट, दुर्गापुरा के तत्वावधान में शुक्रवार को श्रुत पंचमी महापर्व तपोभूमि प्रणेता, व्याख्यान वाचस्पति एवं पर्यावरण संरक्षक परम पूज्य आचार्य 108 प्रज्ञासागर महामुनिराज ससंघ के पावन सान्निध्य में श्रद्धा एवं भक्ति के साथ भव्य रूप से मनाया गया। इस अवसर पर आचार्य श्री ने अपने वर्ष 2026 के चातुर्मास स्थल की भी घोषणा की। ट्रस्ट अध्यक्ष प्रकाशचंद चांदवाड़ एवं उपाध्यक्ष नरेश बाकलीवाल ने बताया कि प्रातः 8 बजे कार्यक्रम का शुभारंभ माँ जिनवाणी की स्थापना, अभिषेक एवं पूजन से हुआ। इसके पश्चात श्रुतावतरण कथा एवं प्रथम ग्रंथ षट्खण्डागम का वाचन किया गया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य श्री ने कहा, ''श्रुत ज्ञान श्रद्धा का आधार है, मोक्ष पथ का सच्चा द्वार है। ज्ञान ही दर्शन है, दर्शन ही चरित्र है और चरित्र ही मोक्ष का मार्ग है।'' इस अवसर पर आचार्य पुष्पदंत-भूतबली, आचार्य जिनसेन, आचार्य नेमीचंद, आचार्य समंतभद्र एवं आचार्य कुंदकुंद के नाम से विभिन्न पुण्यार्जक परिवारों ने धार्मिक अनुष्ठानों में सक्रिय सहभागिता निभाई। इनमें प्रकाशचंद-मनोरमा चांदवाड़, भागचंद-मनोरमा बाकलीवाल, अजीत कुमार-शशि तोतूका, अनिल-शोभी पाटनी तथा मोहनलाल-शांता जैन मणि प्रमुख रहे। कार्यक्रम के दौरान 5 से 15 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के मंत्र न्यास संस्कार संपन्न कराए गए। इस दौरान बच्चों की जिह्वा पर अमृत से स्वस्ति मंत्र का न्यास किया गया। दुर्गापुरा के इतिहास में पहली बार 108 पुण्यार्जक परिवारों द्वारा 108 माँ जिनवाणी की स्थापना की गई, जो आयोजन का विशेष आकर्षण रही। आचार्य प्रज्ञासागर महाराज ने इस अवसर पर वर्ष 2026 का चातुर्मास गौलोक धाम, निमोडिया में करने की घोषणा की। वहीं नाभिराय सोगानी, विनोद जैन कोटखावदा, सुरेश बाकलीवाल, धनराज जैन, पी.सी. जैन एवं रवि जैन सहित सूर्य नगर, तारों की कूट जैन समाज के प्रतिनिधियों ने आचार्य श्री को श्रीफल भेंट कर मंगल आगमन का निवेदन किया। राजस्थान जैन सभा, जयपुर ने महावीर जयंती समारोह की अभूतपूर्व सफलता के लिए आचार्य श्री के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रदीप जैन एवं महामंत्री मनीष बैद के नेतृत्व में उन्हें प्रशस्ति भेंट की। कार्यक्रम का शुभारंभ समाजश्रेष्ठी अनिल बनेठा एवं देवेंद्र बाकलीवाल ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। आचार्य श्री का पाद प्रक्षालन प्रकाशचंद, दीपक एवं नरेश बाकलीवाल (निमोडिया परिवार) द्वारा किया गया। युवा समाजसेवी सोनू जैन, केकड़ी ने जिनवाणी भेंट की। कार्यक्रम का संचालन बाल ब्रह्मचारी संस्कार भैया ने किया। आयोजन में पुरुष श्रद्धालु सफेद कुर्ता-पायजामा तथा महिलाएं सफेद साड़ी की ड्रेस कोड में शामिल हुईं। सायंकाल 7 बजे पालना महोत्सव, महाआरती एवं आनंद यात्रा का आयोजन किया गया, जिसमें सैकड़ों श्रद्धालुओं ने भाग लेकर धर्मलाभ अर्जित किया।

रोटरी क्लब जयपुर नॉर्थ की भव्य 'बिजनेक्स्ट' बिजनेस नेटवर्किंग मीट सम्पन्न

जयपुर. शाबाश इंडिया

रोटरी क्लब जयपुर नॉर्थ द्वारा आयोजित **"BIZNEXT – Mega Business Networking Meetup"** का भव्य आयोजन होटल हॉलिडे इन एक्सप्रेस, गुर्जर की थड़ी, जयपुर में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में शहर के प्रतिष्ठित व्यवसायियों, उद्योगपतियों, उद्यमियों एवं रोटेरियन्स ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सदस्यों के बीच व्यावसायिक संबंधों को सुदृढ़ करना, नए व्यापारिक अवसरों का सृजन करना तथा आपसी सहयोग को बढ़ावा देना था। इस दौरान प्रतिभागियों ने अपने-अपने व्यवसाय का परिचय देते हुए नेटवर्किंग के माध्यम से संभावित साझेदारियों और नए अवसरों पर विचार-विमर्श किया। रोटरी क्लब जयपुर नॉर्थ के अध्यक्ष रोटेरियन अनिल जैन ने अपने संबोधन में कहा कि ''व्यवसाय में सफलता केवल उत्पादों और सेवाओं से नहीं, बल्कि मजबूत रिश्तों, विश्वास और प्रभावी नेटवर्किंग से प्राप्त होती है।'' उन्होंने सभी सदस्यों से इस मंच का अधिकतम लाभ उठाकर अपने व्यवसाय को नई ऊंचाइयों तक ले जाने का आह्वान किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में अतिथियों की सहभागिता विशेष आकर्षण का केंद्र रही। विभिन्न क्षेत्रों से आए उद्यमियों ने अपने अनुभव साझा किए तथा भविष्य में एक-दूसरे के साथ व्यापारिक सहयोग बढ़ाने का संकल्प लिया। सर्वाधिक अतिथियों को आमंत्रित करने वाले सदस्यों को विशेष सम्मान एवं पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया गया। सकारात्मक ऊर्जा, उत्साह और व्यावसायिक संभावनाओं से भरपूर यह आयोजन सभी प्रतिभागियों के लिए अत्यंत लाभदायक सिद्ध हुआ। उपस्थित सदस्यों ने इसे वर्ष की सबसे प्रभावशाली बिजनेस नेटवर्किंग मीट में से एक बताया। कार्यक्रम के अंत में सभी अतिथियों एवं सदस्यों का आभार व्यक्त करते हुए भविष्य में भी ऐसे उपयोगी, नवाचारपूर्ण एवं परिणामदायी आयोजनों को निरंतर आयोजित करने का संकल्प लिया गया।

रोटेरियन अनिल जैन
अध्यक्ष, रोटरी क्लब जयपुर नॉर्थ

ग्रंथों का संरक्षण समाज का नैतिक दायित्व : प्रो. अशोक कुमार जैन

जयपुर. शाबाश इंडिया

अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन विद्वत परिषद की ओर से श्रुत पंचमी (प्राकृत दिवस) महोत्सव के अवसर पर 19 जून 2026 को आभासी माध्यम से राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी की अध्यक्षता परिषद के अध्यक्ष प्रो. अशोक कुमार जैन (वाराणसी) ने की, जबकि मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. फूलचंद जैन (वाराणसी) एवं प्रो. राजेंद्र कुमार जैन (नागपुर) उपस्थित रहे। कार्यक्रम का विषय ''श्रुत संवर्धन में प्राकृत भाषा का योगदान'' था। मुख्य वक्तव्य में प्रो. फूलचंद जैन ने कहा कि जिस प्रकार आचार्य धरसेन स्वामी ने श्रुत रक्षा के लिए महत्वपूर्ण प्रकल्प प्रारंभ किया था, उसी प्रकार आज के विद्वानों को भी श्रुत संवर्धन के लिए संगठित प्रयास करने चाहिए। प्रो. राजेंद्र कुमार जैन ने पांडुलिपियों के संरक्षण एवं संवर्धन की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि भारत सरकार जिस प्रकार प्राचीन पांडुलिपियों के संरक्षण का कार्य कर रही है, उसी दिशा में अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन विद्वत परिषद को भी सक्रिय पहल करनी चाहिए। परिषद के सदस्य डॉ. सत्येंद्र कुमार जैन ने सुझाव दिया कि जिस प्रकार आचार्य शांतिसागर महाराज का शताब्दी वर्ष समारोह मनाया जा रहा है, उसी प्रकार वर्ष 2026 को ''पांडुलिपि संग्रहण वर्ष'' के रूप में मनाया जाए, ताकि देशभर में परिषद के सदस्य इस अभियान में सक्रिय योगदान दे सकें। विद्वत परिषद के उपाध्यक्ष डॉ. सुरेंद्र कुमार जैन ''भारती कर्मयोगी'' ने कहा कि श्रुत संवर्धन का कार्य केवल श्रुत पंचमी तक सीमित नहीं रहना चाहिए। यह हमारा नैतिक दायित्व है कि वर्षभर और जीवन के प्रत्येक क्षण शास्त्रों एवं पांडुलिपियों के संरक्षण के प्रति सजग रहें। अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. अशोक कुमार जैन ने कहा कि आचार्य धरसेन स्वामी के मार्गदर्शन में षट्खंडागम जैसे महान ग्रंथ की रचना संभव हुई तथा भट्टारकों ने भी शास्त्र संरक्षण में उल्लेखनीय योगदान दिया। उन्होंने कहा कि यद्यपि तीर्थंकरों का जन्म उत्तर भारत में हुआ, किंतु अनेक महत्वपूर्ण जैन शास्त्रों का संरक्षण दक्षिण भारत में हुआ। उन आचार्यों के महनीय योगदान को स्मरण करते हुए आज के विद्वानों को भी पांडुलिपियों के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए आगे आना चाहिए।

नवीन रजत जिनवाणी विराजमान महोत्सव धुलियान में संपन्न

धुलियान (मुर्शिदाबाद, पश्चिम बंगाल). शाबाश इंडिया

श्रुत पंचमी महापर्व के पावन अवसर पर अभिषेक एवं शांतिधारा के पश्चात धार्मिक शिक्षण शिविर के लिए पधारीं संगीता दीदी एवं शारदा दीदी के सानिध्य में परम पूज्य गणिनी आर्यिका सुयोग्य नंदिनी माताजी की प्रेरणा से निर्मित नवीन रजत जिनवाणी का भव्य विमोचन किया गया। इसके उपरांत नवीन रजत जिनवाणी को आकर्षक पालकी में विराजमान कर नगर में भव्य शोभायात्रा निकाली गई। श्रद्धालुओं की उपस्थिति में श्री मंदिर जी में श्रुत स्कंध विधान का आयोजन संपन्न हुआ। तत्पश्चात सौभाग्यशाली विराजमानकर्ता प्रभात कुमार बड़जात्या एवं श्रीमती सुषमा देवी बड़जात्या परिवार द्वारा विधि-विधानपूर्वक रजत जिनवाणी को यथास्थान विराजमान कराया गया। दोपहर में मंदिर परिसर के आसपास वृक्षारोपण का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें समाजजनों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। सायंकाल महाआरती एवं जिनवाणी माता को पालकी में झुलाने का भावपूर्ण एवं भक्तिमय कार्यक्रम संपन्न हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

संकलन : संजय कुमार जैन बड़जात्या